



आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक



O
C
M
Y
B

वर्ष -12 अंक - 158

प्रयागराज, बुधवार 07 अक्टूबर, 2026

पृष्ठ- 8

मूल्य : 3.00 रुपये

पाक का ड्रोन हमलों से बचने के लिए सस्ता जुगाड़, सेना-पुलिस के ठिकानों पर मछली पकड़ने वाला जाल लगा रहे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में ड्रोन हमलों से बचने के लिए पुलिस और सेना अब मछली पकड़ने वाले जाल का इस्तेमाल कर रही हैं। अल जजीरा के मुताबिक, खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के संवेदनशील इलाकों में पुलिस चौकियों और सुरक्षा ठिकानों के ऊपर कई मीटर की ऊंचाई पर ये जाल लगाए जा रहे हैं। सुरक्षाकर्मियों का ऐसा मानना है कि हमलावर ड्रोन इन जालों में फंस सकते हैं। इससे ड्रोन हमले में होने वाला नुकसान 40 से 50 फीसदी तक कम किया जा सकता है। हालांकि, सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस तरीके को पूरी तरह भरोसेमंद मानने से इनकार किया है। पुलिस के मुताबिक, जाल लगाने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि आतंकियों ने हमलों का तरीका बदल दिया है। अब वे गोलीबारी और मोर्टर के साथ ड्रोन का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। खैबर पख्तूनख्वा के हंगू जिले में 29 जुलाई को सबसे घातक हमलों



गए। इसके बाद कई घंटे तक चली मुठभेड़ में 15 हमलावर भी मारे गए। पुलिस के मुताबिक, इस साल खैबर पख्तूनख्वा के हंगू जिले में कम से कम 16 हमले हो चुके हैं। इसी वजह से यह जिला प्रांत के सबसे संवेदनशील इलाकों में

शामिल है। ऐसे हमलों से बचने के लिए हंगू पुलिस ने कम लागत वाला तरीका अपनाया। पुलिस

अधिकारी तारिक हबीब के मुताबिक, एक सामान्य पुलिस चेकपोस्ट को इस तरह के जाल से ढकने में करीब 1.4 लाख रुपए खर्च होते हैं। खैबर पख्तूनख्वा पुलिस के प्रवक्ता के मुताबिक, हंगू के अलावा कोहाट, करक, बन्नु, लक्की मरवत और डेरा इस्माइल खान जैसे कम से कम 5 और संवेदनशील जिलों में भी पुलिस चौकियों और चेकपोस्ट पर ये जाल लगाए गए हैं।

प्रांत के कुछ इलाकों में सेना के ठिकानों पर भी 'एंटी-ड्रोन जाल' लगाए गए हैं। पुलिस ने इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए प्रांतीय सरकार से अतिरिक्त पैसे भी मांगे हैं। सुरक्षा विशेषज्ञों को इस तरीके पर भरोसा नहीं:- इस्लामाबाद स्थित सेंटर फॉर रिसर्च एंड सिस्टीमेटि स्टडीज के कार्यकारी निदेशक इमतिआज गुल ने इसे नासमझी वाला सस्ता तरीका बताया। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

सऊदी में तैनात होंगी पाक/तुर्किये की फौज, हूती विद्रोहियों के खिलाफ साथ आए तीनों देश-पिछले महीने पाकिस्तान ने मदद से इनकार किया था

रियाद। लाल सागर में हूती विद्रोहियों की बढ़ती ताकत ने अब सऊदी अरब को सीधे सैन्य कार्रवाई के लिए मजबूर कर दिया है। सऊदी समर्थित यमनी सेना ने हूतियों के खिलाफ अभियान शुरू कर दिया है। इसी बीच पाकिस्तान और तुर्किये भी सऊदी अरब की सुरक्षा के लिए अपने सैन्य बल तैनात करने की तैयारी में हैं। सोमवार को रियाद में मक्का रक्षा समझौते की इमरजेंसी मीटिंग हुई। इसमें सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये ने सामूहिक रक्षा व्यवस्था को सक्रिय करने और सऊदी अरब में सैन्य बलों की तेजी से तैनाती पर सहमति जताई। इससे पहले भी सऊदी ने पाकिस्तान से सैन्य मदद मांगी थी। हालांकि, पाकिस्तान ने सितंबर में मदद देने से इनकार कर दिया था। यरुशलम पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान ने तब कहा था कि उसकी सेना किसी दूसरे देश की जमीन पर युद्ध में शामिल नहीं होगी। हूती विद्रोही पीछे हटे,



कई अहम इलाकों पर कब्जा कर लिया था। इससे इस रणनीतिक समुद्री रास्ते पर हूतियों की पकड़ मजबूत हो गई थी। लेकिन अब तत्सीर बदल गई है। 5 अक्टूबर को सऊदी समर्थित यमनी सेना ने हूतियों के खिलाफ बड़ा जवाबी अभियान शुरू किया। यमनी सेना ने बाब अल-मंदेब के पास धुबाब इलाके और कई अहम ठिकानों पर दोबारा कब्जे का दावा किया।

इसके बाद सेना मोचा की तरफ बढ़ी और यमनी सरकार ने शहर को भी हूतियों से वापस लेने का दावा किया। रॉयटर्स के मुताबिक, सरकारी बलों ने हूतियों को पिछले महीने कब्जे में लिए गए ज्यादातर इलाकों से पीछे धकेल दिया है। सऊदी अरब जल्द हूतियों पर हमला कर सकता है:-सऊदी अरब यमन में हूती विद्रोहियों के खिलाफ जंग शुरू करने की तैयारी कर रहा है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक,

सऊदी 1 लाख से ज्यादा सैनिकों को यमन में उतार सकता है। इसका मकसद बाब अल-मंदेब स्ट्रेट को हूतियों के कब्जे से छुड़ाना और समुद्री व्यापार का रास्ता सुरक्षित करना है। रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब के सामने सैन्य कार्रवाई के दो विकल्प हैं - पहला विकल्प: बाब अल-मंदेब के आसपास सीमित हमला करके समुद्री रास्ते को सुरक्षित करने

की कोशिश की जाएगी। दूसरा विकल्प: यमन के कई इलाकों में एक साथ ऑपरेशन चलाया जा सकता है। इसमें अल-बायदा, मारिब, ताइज और अल-जौफ जैसे इलाके शामिल हो सकते हैं। इस ऑपरेशन का नेतृत्व यमन की सेनाएं करेंगी, जिन्हें सऊदी अरब का समर्थन मिलेगा। जरूरत पड़ने पर सऊदी अरब हवाई हमले भी कर सकता है।

मक्का पैक्ट लागू- एक पर हमला तीनों पर माना जाएगा:- रियाद में सोमवार को हुई बैठक के साथ मक्का रक्षा समझौता औपचारिक रूप से लागू हो गया। इसके तहत एक देश पर हमला तीनों देशों पर हमला माना जाएगा। बैठक में तीनों देशों के वरिष्ठ रक्षा और सैन्य अधिकारी शामिल हुए।

तुर्किये से विदेश मंत्री हाकान फिदान और रक्षा मंत्री याशार ग्यूलर, जबकि सऊदी अरब से विदेश मंत्री फ़िस फ़ैसल बिन फरहान और रक्षा मंत्री फ़िस खालिद बिन सलमान मौजूद रहे।

अफगानिस्तान ने चीन तक बनाई सड़क, भारत के लिए परेशानी का सबब.121 किमी का वाखान कॉरिडोर

काबुल/नई दिल्ली। अफगानिस्तान ने उत्तर-पूर्वी बद्रख्शां प्रांत में वाखान कॉरिडोर

लिए वाखान कॉरिडोर शिनजियांग की सुरक्षा और व्यापार के लिहाज से महत्वपूर्ण है। चीन ने इसी साल इस इलाके में नया प्राश्नासिनिवाज कॉरिडोर भी बनाया है। इस रास्ते से चीन को अफगानिस्तान के सोने और दूसरे खनिजों तक आसानी से पहुंच मिल सकती है। साथ ही ईरान

के जरिए चीन के शिनजियांग तक 121 किलोमीटर लंबी सड़क बना ली है। करीब 55 लाख डॉलर की लागत से बनी इस सड़क का उद्घाटन भी हो गया है। यह सड़क अफगानिस्तान और चीन के बीच पहला सीधा जमीनी रास्ता है।तालिबान सरकार इस सड़क के जरिए अपने प्राकृतिक संसाधनों और सोने की खदानों को चीन के बाजार तक पहुंचाना चाहती है। इससे उसे दूसरे देशों और विदेशी कंपनियों पर अपनी निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है। पाकिस्तान के साथ तनाव के बीच इस रास्ते को रणनीतिक तौर पर भी अहम माना जा रहा है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अफगान विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी से मुलाकात के दौरान कहा था कि भारत की नजर वाखान में हो रही गतिविधियों पर है। चीन के लिए खनिज-कनेक्टिविटी का रास्ता-चीन के

और मध्य पूर्व के बाजारों तक भी जमीनी रास्ता मिल सकता है। भारत के लिए चिंता का विषय है:-वाखान कॉरिडोर भारत के दावे वाले गिलगित-बाल्टिस्तान के पास है। ऐसे में इस इलाके में चीन की बढ़ती मौजूदगी भारत के लिए चिंता की बात मानी जा रही है। यह क्षेत्र लद्दाख के भी करीब है। इससे भारत को उसी सीमा पर निगरानी और सुरक्षा बढ़ानी पड़ सकती है। भारत को रणनीतिक मौजूदगी बढ़ानी होगी-रक्षा विशेषज्ञ एन्सी बिपिंद्र के मुताबिक, वाखान में चीन और मध्य एशिया के हित जुड़े हुए हैं। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनाव और इस इलाके में चीन की बढ़ती मौजूदगी से वाखान का महत्व बढ़ गया है। उनके मुताबिक, भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया के देशों के साथ संपर्क बढ़ाकर अपनी कूटनीतिक और राजनीतिक मौजूदगी मजबूत करनी चाहिए।

लंदन-शिकागो फ्लाइट 28 हजार फीट नीचे आई,पायलट ने इमरजेंसी अलर्ट भेजा,लंदन लौटी, वजह साफ नहीं

लंदन। ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट बीए-295 आयरलैंड के



ऊपर उड़ान भरते समय कुछ ही मिनटों में करीब 28 हजार फीट नीचे आ गई। इस दौरान विमान ने 7700 इमरजेंसी कोड एक्टिव किया। इसके बाद फ्लाइट को शिकागो जाने के बजाय वापस लंदन की ओर मोड़ दिया गया। इमरजेंसी सिग्नल की वजह अभी सामने नहीं आई है। फ्लाइट ट्रैकिंग डेटा के मुताबिक, विमान आयरलैंड के ऊपर करीब 9 हजार फीट की ऊंचाई तक आया

फ्रांस में टीचरों की कमी को लेकर आंदोलन हिंसक,धमाके में 15 साल के छात्र का हाथ उड़ा, 5 हजार गिरफ्तार, 87फीसदी गिरफ्तार नाबालिग

पेरिस। फ्रांस में शिक्षा व्यवस्था में सुधार की मांग को

के सिर पर आंसू गैस का गोला लगाने की खबर सामने आई थी।



लेकर छात्र सड़कों पर उतर गए हैं। सितंबर में शुरू हुआ यह आंदोलन अब पूरे देश में फैल गया है। छात्र स्कूलों में बढ़ती भीड़, जर्जर इमारतों और शिक्षकों की कमी का विरोध कर रहे हैं। पिछले एक हफ्ते में छात्रों ने सैकड़ों स्कूलों को बंद कराया। आंदोलन के दौरान कई जगह छात्रों और पुलिस के बीच झड़प भी हुई। लैंस शहर में एक स्कूल के पास हुए धमाके में 15 साल के एक छात्र का हाथ उड़ गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। इससे पहले पिछले हफ्ते 14 साल के ईडन नाम के छात्र

उसके जबड़े में दो जगह फ्रैक्चर हुआ था और उसे बड़ी सर्जरी करानी पड़ी। प्रदर्शन के दौरान कम से कम 190 छात्र घायल हुए हैं, जबकि 5,060 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें 87 फीसदी नाबालिग हैं। मंगलवार को देशभर में सबसे बड़े प्रदर्शन का ऐलान:- मंगलवार को छात्रों के समर्थन में देशभर में प्रदर्शन की तैयारी है। प्रमुख छात्र संगठन यूनियन सिंडिकल लिसेन ने लोगों से इसमें शामिल होने की अपील की है। शिक्षकों के संगठनों ने भी अपने सदस्यों से प्रदर्शन में शामिल होने को

कहा है। छात्रों का कहना है कि स्कूलों में छात्रों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन उनके मुकाबले कक्षाएं, शिक्षक और दूसरी सुविधाएं नहीं बढ़ाई गई हैं। फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबास्तियन लेकोर्नू ने छात्रों और शिक्षा कर्मचारियों की समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ कदमों की घोषणा की है। उन्होंने स्कूलों में बदलाव लाने का वादा किया है। हालांकि, हिंसा को लेकर उन्होंने साफ कहा है कि सरकार नरमी नहीं बरतेगी। प्रदर्शन के दौरान कई जगह स्कूलों की नाकेबंदी की गई और कुड़ेदानों में आग लगाई गई। शिक्षा मंत्री एडुआर जोफ्रे के मुताबिक आंदोलन शुरू होने के बाद से 24 स्कूलों को जला दिया गया या उनमें तोड़फोड़ की गई। 21 सितंबर को छोटे से विरोध से शुरू हुआ आंदोलन:-आंदोलन की शुरुआत 21 सितंबर को पेरिस के एक स्कूल से हुई थी। छात्रों की मांग थी कि स्कूल में स्टाफ और संसाधनों की कमी दूर की जाए। स्कूल में अतिरिक्त स्टाफ भेजे जाने के बाद वहां की हड़ताल खत्म हो गई, लेकिन तब तक दूसरे इलाकों में भी विरोध शुरू हो चुका था। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

स्पेन में किराएदार को घर से निकालने पर सरकार गिरी,87 साल की महिला महंगा किराया नहीं चुका पाई-8 महीने पहले चुनाव होंगे

मैड्रिड। स्पेन में 87 साल की एक महिला को घर से निकालना बहुत बड़ा मुद्दा बन गया। महंगे किराए और लोगों को घर से

की शुरुआत 23 सितंबर को हुई। मैड्रिड में 87 साल की महिला डेल कार्मेन अबास्कल को उस घर से निकाल दिया गया,

किराया उनकी पूरी मासिक आय से भी काफी ज्यादा था। इसी वजह से वह नया किराया देने की स्थिति में नहीं थीं। इसके बाद मामला कोर्ट में चला गया था। घटना के बाद पूरे देश में विरोध शुरू हुआ:-अबास्कल को घर से निकाले जाने की तत्सीर और वीडियो सामने आने के बाद मामला तेजी से फैल गया। लोगों का कहना था कि अगर 87 साल की बुजुर्ग महिला अपनी पूरी पेंशन देने के बाद भी घर का किराया नहीं चुका सकतीं, तो यह सिर्फ एक परिवार की समस्या नहीं है। मैड्रिड समेत कई शहरों में लोगों ने महंगे किराए और बेदखली के खिलाफ प्रदर्शन किए। अबास्कल का मामला धीरे-धीरे स्पेन के बढ़ते आवास संकट का प्रतीक बन गया। सरकार पर भी दबाव बढ़ने लगा। प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज की सरकार ने कहा कि बुजुर्गों और दूसरे कमजोर किराएदारों को घर से निकालने से रोकने के लिए तुरंत कदम उठाने की जरूरत है। सरकार ने दो इमरजेंसी बिल पेश किए, दोनों खारिज:-29 सितंबर को सरकार ने किराएदारों को राहत देने के लिए संसद में दो इमरजेंसी बिल पेश किए। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**



निकाले जाने के खिलाफ हजारों लोग सड़कों पर उतर आए। मामला इतना बढ़ा कि सरकार को किराएदारों को राहत देने के लिए संसद में इमरजेंसी बिल लाने पड़े। लेकिन सरकार इन्हें पास नहीं करा सकी। इसके बाद प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने तय समय से करीब 8 महीने पहले आम चुनाव कराने का ऐलान कर दिया। स्पेन में 29 नवंबर 2026 को वोटिंग होगी। 70 साल से घर में रह रही थी बुजुर्ग:- मामले

जहां वह करीब 70 साल से रह रही थीं। यह घर अबास्कल परिवार के पास कई दशकों से किराए पर था। 2018 में घर के मूल मालिक ने पूरी इमारत एक रियल एस्टेट कंपनी को बेच दी। इसवे बाद व कंपनी और अबास्कल में किराए को लेकर विवाद शुरू हो गया। कंपनी ने किराया 500 यूरो से बढ़ाकर 2650 यूरो कर दिया। अबास्कल की मासिक पेंशन ही करीब 1,350 यूरो थी। यानी मांगा गया

नाइजीरिया में 25 यात्री और 7 क्रू सवार लोगों को ले जा रहा मिलिट्री-प्लेन क्रैश,नदी के पास गिरा, सर्च ऑपरेशन जारी

नाइजीरिया। नाइजीरिया के दक्षिणी हिस्से में सोमवार को 32 लोगों को लेकर जा रहा सैन्य प्लेन क्रैश हो गया। प्लेन में 25 यात्री और 7 क्रू मेंबर सवार थे।



हादसा ऑडो राज्य के नदी किनारे बसे इग्बोकोडा शहर में हुआ। हादसे में कितने लोग हताहत हुए, इसकी तत्काल जानकारी नहीं मिली है। नाइजीरिया वे एविएशन मिनिस्टर फेस्टस कीयामो ने बताया कि प्लेन एक नियमित मिशन पर देश के आर्थिक केंद्र लागोस जा रहा था। स्थानीय समय के मुताबिक सुबह करीब 9 बजे प्लेन रडार से गायब हो गया। बाद में पता चला कि यह

नौसैनिक बेस के पास क्रैश हुआ है। स्थानीय लोगों ने बताया कि प्लेन नदी के पास गिरा और उसका कुछ हिस्सा पानी में डूब रहा था। प्रत्यक्षदर्शी

को पूरे देश में झंडे आधे झुकाने का आदेश दिया है। टिनुबु ने मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना जताते हुए कहा कि देश के एयरफोर्स जवान अपनी जान जोखिम में डालकर सुरक्षा करते हैं और उनका बलिदान कभी नहीं भुलाया जाएगा। राष्ट्रपति ने नाइजीरियाई एयरफोर्स को हादसे की तुरंत और पूरी जांच करने का आदेश दिया है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। हादसे में एटीआर-42 मिलिट्री प्लेन क्रैश हुआ:-नाइजीरियाई एयरफोर्स ने बताया कि क्रैश हुआ प्लेन एटीआर-42 था। नाइजीरियाई सेना इस प्लेन का इस्तेमाल खुफिया जानकारी जुटाने, निगरानी करने और सैनिकों व सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए करती रही है। पानी में रेस्क्यू ऑपरेशन चलाता ज्यादा मुश्किल:-नदी या पानी में प्लेन गिरने के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन जमीन पर हादसे के मुकाबले ज्यादा मुश्किल हो सकता है। गोताखोरों और रेस्क्यू टीम को तेज बहाव, कम विजिबिलिटी, प्लेन के पानी में डूबने और मलबे के फैलने जैसी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। पानी में रेस्क्यू ऑपरेशन की बड़ी चुनौतियां:- **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

एक्सेल कंप्यूटर का वार्षिकोत्सव धूमधाम से संपन्न, शिक्षक-समाजसेवी एवं मेधावी छात्र हुए सम्मानित संकल्प संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सोमवार को एडीएम

एक्सेल कंप्यूटर के प्रबंध निदेशक मुकेश पाण्डेय ने किया। उन्होंने



कॉलोनी स्थित चंद्रलोक गेस्ट हाउस में सोमवार को एक्सेल कंप्यूटर का वार्षिकोत्सव समारोह हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त जिला जज शिवमणि शुक्ला मौजूद रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में अवधेश पाण्डेय, महामंत्री अवतिका रामलीला कमेटी ने कार्यक्रम में सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन

सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। समारोह के दौरान शिक्षकों, समाजसेवियों तथा संस्थान से जुड़े प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में युवा समाजसेवी प्रभाकर तिवारी, प्रसिद्ध गायक आशीष शर्मा, नीतू तिवारी, रोहित पाण्डेय, अखिलेश यादव, आशु सिंह एवं शिक्षा सहित अन्य आमंत्रित अतिथियों की मौजूदगी रही।

हरहुआ के करोमा गांव में 15 साल से बंद राजकीय नलकूप के रिबोर का रास्ता साफ, जमीन की पैमाइश के बाद काम शुरू करोमा में राजस्व टीम ने सुरक्षित कराई सरकारी जमीन, किसानों को सिंचाई सुविधा मिलने की उम्मीद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी/हरहुआ। सोमवार को

306 की जमीन की पैमाइश की गई। मौके पर क्षेत्र के लेखपाल,



विकासखंड हरहुआ के ग्राम पंचायत करोमा में करीब 15 वर्षों से बंद पड़े राजकीय नलकूप के रिबोर का रास्ता आखिरकार साफ हो गया। राजस्व विभाग की टीम ने ग्रामसभा की बंजर भूमि की पैमाइश कर सरकारी जमीन को सुरक्षित कराया, जिसके बाद सिंचाई विभाग ने रिबोर की मशीन मौके पर पहुंचाकर कार्य शुरू कर दिया। नलकूप के दोबारा चालू होने की उम्मीद से किसानों में खुशी का माहौल है।जानकारी के अनुसार राजकीय नलकूप के रिबोर के लिए ग्रामसभा की आराजी संख्या

राजस्व निरीक्षक, प्रधान प्रतिनिधि भगत यादव तथा हरहुआ पुलिस टीम मौजूद रही। पैमाइश के बाद संबंधित भूमि को सुरक्षित कर सिंचाई विभाग के दौरान गांव के ही कुछ लोगों द्वारा टीम के कार्य में कथित रूप से व्यवधान डाला गया। उन्होंने आरोप लगाया कि धर्मेंद्र दूबे और धनंजय दूबे ने टीम के साथ अभद्रता की तथा जरीब फेंकने और धमकी देने का प्रयास किया। स्थिति को देखते हुए

समारोह में सभी छात्रों को प्रशस्ति पत्र एवं शिलालेख प्रदान कर सम्मानित किया गया। बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड के लिए प्रियांशु सिंह, प्रथम ओझा एवं अंकित विश्वकर्मा को सम्मानित किया गया। वहीं कंप्यूटर जनरल नॉल्लेज टेस्ट में अनुष्का सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रथम पुरस्कार हासिल किया, जबकि गौरव पाण्डेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम में एडवोकेट विनोद द्विवेदी, अधिवक्ता उच्चा न्यायालय, डॉ. रत्नेश द्विवेदी, अस्स्टेंट प्रोफेसर तथा शेष बहादुर मौर्य, दूरस्थ शिक्षा कोऑर्डिनेटर, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

समारोह के दौरान अतिथियों ने विद्यार्थियों को शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों, शिक्षकों, समाजसेवियों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

मौके पर मौजूद पुलिस ने धर्मेंद्र दूबे को चौकी ले जाकर विधिक कार्रवाई की। पुलिस की मौजूदगी में पैमाइश की प्रक्रिया पूरी कराई गई और इसके बाद सिंचाई विभाग ने नलकूप के रिबोर का कार्य शुरू कर दिया। लंबे समय से सिंचाई के पानी की समस्या झेल रहे किसानों ने प्रशासन की कार्रवाई पर संतोष जताया। किसानों का कहना है कि नलकूप के बंद रहने से उन्हें सिंचाई के लिए निजी साधनों पर निर्भर रहना पड़ता था, जिससे खेती की लागत बढ़ रही थी। नलकूप के रिबोर के बाद इसके पुनः चालू होने से क्षेत्र के किसानों को काफी राहत मिलने की उम्मीद है। प्रधान प्रतिनिधि ने बताया कि सरकारी जमीन की सुरक्षा और नलकूप के रिबोर कार्य में बाधा डालने वालों के खिलाफ बड़ागांव थाने में तहरीर दी गई है। उन्होंने प्रशासन से सरकारी भूमि की सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा नलकूप का रिबोर कार्य शीघ्र पूरा कराकर किसानों को नियमित सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने की मांग की। मौके पर किसान रामजी यादव, त्रिलोकी दूबे, विजय कुमार, अजय पाण्डेय, मच्छींद्र यादव, शोभालाल, धीरज, बुझारत सहित अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

कोपागंज में दवा न मिलने से मरीज परेशान, परिजनों ने स्वास्थ्य विभाग से कार्रवाई की मांग की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कोपागंज/मऊ। कोपागंज क्षेत्र में एक मरीज को चिकित्सक द्वारा लिखी गई दवा उपलब्ध नहीं होने का मामला सामने आया है। इस संबंध में मरीज के परिजन आनंद स्वरूप तिवारी निवासी कोपागंज ने थाना कोपागंज में प्रार्थना पत्र देकर मामले की जांच एवं उचित कार्रवाई की मांग की है।प्रार्थना पत्र के अनुसार, अन्नपूर्णा तिवारी की तबीयत खराब होने पर उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कोपागंज

ले जाया गया, जहां चिकित्सक द्वारा जांच के बाद दवा लिखी गई। परिजनों का आरोप है कि चिकित्सक द्वारा लिखी गई दवा मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध नहीं कराई गई। दवा लेने के बाद मरीज की तबीयत और बिगड़ने लगी तथा शरीर के अंगों ने ठीक से काम करना बंद कर दिया। परिजनों के अनुसार बाद में कई चिकित्सकों से उपचार कराया गया, लेकिन तत्काल राहत नहीं मिली। प्रार्थना पत्र में यह भी

उल्लेख किया गया है कि 2 अक्टूबर 2026 से मरीज को दवा संबंधी परेशानी बनी हुई है और काफी उपचार के बाद अब स्वास्थ्य में कुछ सुधार बताया जा रहा है।

मरीज के परिजन ने दवा की उपलब्धता तथा पूरे मामले की जांच कराकर जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध उचित कार्रवाई और भविष्य में मरीजों को ऐसी परेशानी से बचाने की व्यवस्था किए जाने की मांग की।

नाली निर्माण में मानक के विपरीत सामग्री लगाने का आरोप, लोगों ने किया प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कोपागंज/मऊ। नगर पंचायत कोपागंज के वार्ड नंबर एक स्थित चमार बस्ती में नाली निर्माण को लेकर स्थानीय लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। लोगों ने निर्माण कार्य में घटिया सामग्री इस्तेमाल किए जाने और मानक के अनुरूप मसाला नहीं लगाए जाने का आरोप लगाया। लोगों का कहना है कि यदि नाली का निर्माण निर्धारित मानक के अनुसार नहीं कराया गया तो जल निकासी की समस्या बनी रहेगी और पानी ओवरफ्लो होकर सड़क पर जमा होगा। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि नाली निर्माण में आठ-एक के अनुपात में मसाला तैयार कर उसका इस्तेमाल किया जा रहा है, जो मानक के अनुरूप नहीं है। लोगों का कहना है कि पहले भी यहां करीब तीन रद्दा की नाली बनी थी और अब नई नाली का निर्माण भी तीन रद्दा में ही कराया जा रहा है। स्थानीय लोगों की मांग है कि नाली कम से कम चार रद्दा की बनाई जाए, जिससे पानी आसानी से निकल सके और सड़क पर



की। आरोप है कि ठेकेदार ने कहा कि जितनी लिमिट निर्धारित है, उतनी ही नाली का निर्माण कराया जाएगा। इसके बाद स्थानीय लोगों ने मौके पर विरोध प्रदर्शन करते हुए निर्माण कार्य की जांच कराने की मांग की। वहीं मामले में नगर पंचायत कोपागंज के अधिशासी अधिकारी सी.एच. तिवारी ने कहा कि निर्माण कार्य की जांच कराई जाएगी। जांच के दौरान यदि किसी प्रकार की गड़बड़ी या निर्माण मानक के विपरीत पाया जाता है तो उसे दोबारा तोड़कर निर्धारित मानक के

अनुसार निर्माण कराया जाएगा।उधर, निर्माण कार्य करा रहे ठेकेदार ने स्थानीय लोगों के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि नाली का निर्माण निर्धारित मानक के अनुसार कराया जा रहा है और निर्माण में सही सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है। ठेकेदार ने आरोप लगाया कि कुछ लोग मौके पर राजनीति कर रहे हैं। उनका कहना है कि एक-दो लोगों ने उनसे पैसे की मांग की थी, पैसा नहीं देने पर उनके द्वारा इस तरह के आरोप लगाए जा रहे हैं। नाली निर्माण को लेकर हुए विरोध प्रदर्शन में अंशु कुमार, राकेश कुमार, विवेक कुमार, रविशंकर, लालमैन मास्टर, बलजोर, डब्ल्यू आशा, उषा, गीता, घुरीया, तिलोत्था, गुंजन, रमभा, संगीता, चन्द्र कला, सीता, रीता, शांति, दुर्गावती आदि लोग मौजूद रहे। स्थानीय लोगों ने नगर पंचायत प्रशासन से निर्माण कार्य की निगरां जांच कराने, निर्माण में गुणवत्ता सुनिश्चित करने तथा जल निकासी की समस्या को देखते हुए नाली का निर्माण निर्धारित मानक के अनुरूप कराने की मांग की है।

जिले में आयोजित होगा राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन, मंच पर दिखेंगे बड़े नेता, वैश्य समाज ने बनाई 2027 की रणनीति सम्मेलन के माध्यम से दिखाएगी अपने ताकत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार कोउत्तर

समाज काम करेगा वैश्य समाज सिर्फ राजनीतिक पार्टियों को



प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में सभी राजनीतिक दल जातीय समीकरण को साधने में लगे हुए हैं उसी के तहत वैश्य एकता परिषद ने भी अपनी रणनीति बनाई है और 27 अक्टूबर 2026 को जिले में एक बड़े वैश्य महासम्मेलन का आयोजन करने का निर्णय लिया है त स्थानीय होटल में आयोजित पत्रकार वार्ता में सम्मेलन की विस्तृत जानकारी दी गई त महाराजगंज नगर पंचायत अध्यक्ष सरला साहू के प्रतिनिधि प्रभात साहू ने बताया कि 2027 में वैश्य समाज अपनी भूमिका को मजबूती के साथ प्रस्तुत करेगा समाज ने निर्णय किया है कि राजनीतिक दल अगर उन्हें हिस्सेदारी देते हैं तो एक बड़े राजनीतिक परिवर्तन को सुनिश्चित करने के लिए समाज आगे बढ़ेगात लालगंज नगर पंचायत अध्यक्ष सरिता गुप्ता के प्रतिनिधि दीपेंद्र गुप्ता ने भी सहमति जताई है कि जो भी राजनीतिक पार्टी वैश्य समाज के प्रत्याशी पर विश्वास करेगी समाज उसके साथ रहेगात ऊंचाहार नगर पंचायत अध्यक्ष ममता जायसवाल के प्रतिनिधि कृष्ण कुमार जायसवाल ने साफ कहा कि जिसकी जितनी हिस्सेदारी उत्तनी उसकी भागीदारी के नियम पर अब

मजबूत करने और उन्हें वोट देने तक सीमित नहीं रहेगा।जिला अध्यक्ष राजकुमार गुप्ता एडवोकेट ने बताया कि वैश्य



एकता परिषद के द्वारा 27 अक्टूबर को रिफॉर्म क्लब में इस सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिसमें प्रदेश के बड़े वैश्य नेता और जनप्रतिनिधि एकत्रित होंगे इसी सम्मेलन के माध्यम से चुनाव की रणनीति तय की जाएगीत राष्ट्रीय महासचिव ई.विजय रस्तोगी ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर की बैठक में तय हुआ कि जो राजनीतिक वैश्य समाज को सम्मान देगा और चुनाव में भागीदारी करने के लिए टिकट देगा समाज उसका समर्थन खुलकर करेगा त जिला महामंत्री आलोक गुप्ता एडवोकेट ने बताया कि कार्यक्रम की

अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुमंत गुप्ता करेंगे और कार्यक्रम में रायबरेली के चुने हुए जनप्रतिनिधि जिसमें महाराजगंज नगर पंचायत अध्यक्ष सरल साहू, लालगंज अध्यक्ष सरिता गुप्ता उनके प्रतिनिधि जितेंद्र अग्रहरि, ऊंचाहार अध्यक्ष ममता जायसवाल उनके प्रतिनिधि टिल्लू जायसवाल और सलीन के पूर्व अध्यक्ष चंद्रशेखर रस्तोगी उपस्थित रहेंगे।

इसके साथ विभिन्न उपजातियों के जिला अध्यक्ष और उनके समाज के लोग उपस्थित रहेंगे जिसमें अग्रहरि समाज के जिला अध्यक्ष राजेंद्र अग्रहरि, अग्रवाल समाज से पवन गुप्ता,

लोकल फाल्ट तत्काल दूर करें बिजली विभाग -डा. मनोज कुमार पांडेय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को उत्तर

से उसकी रिपोर्ट प्रतिदिन उन्हें भेजी जाये। लोकल स्तर पर जो



प्रदेश राज्य सरकार के कैंबिनेट मंत्री डॉ मनोज कुमार पांडे ने आज विद्युत विभाग की समीक्षा की, जिस पर उन्होंने विद्युत अभियंताओं को आगाह किया कि छोटी-मोटी फाल्ट और लोकल फाल्ट तत्काल ठीक कराई जाए। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। उन्होंने निर्देश दिए कि विद्युत विभाग के चलते किसी भी किसान की खेती का कार्य अवरुद्ध न होने पाए सभी विद्युत फीडर की समय-समय पर जांच कराई जाए और नियमित रूप

विशाल भोजनदान के साथ सम्पन्न हुआ बुद्ध विहार गंगौली में आयोजित वर्षावास कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। सिरमौर बुद्ध

प्रबंधक भंते प्रज्ञामित्र, अध्यक्ष भंते धम्मदीप, कोषाध्यक्ष भंते



विहार गंगौली सोइया में आयोजित पांच दिवसीय वर्षावास कार्यक्रम विशाल भोजनदान के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता भंते धम्मदीप अध्यक्ष सिरमौर बुद्ध विहार गंगौली सोइया ने व संचालन बुद्ध विहार की कार्यकारिणी के सदस्य रामकिशोर बौद्ध ने किया।वर्षावास कार्यक्रम समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रदीप यादव प्रधान प्रतिनिधि गंगौली रहे।वर्षावास कार्यक्रम के समापन के दिन बौद्ध उपासकों की भारी भीड़ उमड़ी। बौद्ध भिक्षुओं व अन्य प्रमुख वक्ताओं ने बुद्ध व डॉ आंबेडकर पर अपने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर उपस्थित रहे अन्य प्रमुख लोगों में बुद्ध विहार गंगौली सोइया के

शीलरतन, भंते शान्ति मित्र, भंते आनन्द मित्र,सचिव रामफल फौजी, रिटायर्ड बैंक प्रबंधक आर बी चक्रवर्ती, बौद्धाचार्य कन्धई राम, श्यामलाल भारती ,नजर बौद्धाचार्य हीरालाल, बाबुलाल, रामसमुझ चौधरी, रामकिशोर, रामदेव अमीन, छोटेलाल,राम आभिलाष बौद्ध पल्दुराम मास्टर,विद्या प्रसाद, रामदेव रिटायर्ड अधिकारी, जियालाल बौद्ध, नीरज बौद्ध,इन्द्र पाल गौतम, फूलचंद्र, धर्मन्द्र कुमार, आकांक्षा, कलावती, आशा, भीड़ उमड़ी। बौद्ध भिक्षुओं व अन्य प्रमुख वक्ताओं ने बुद्ध व डॉ आंबेडकर पर अपने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर उपस्थित रहे अन्य प्रमुख लोगों में बुद्ध विहार गंगौली सोइया के

रमापति शर्मा बने राष्ट्रीय नाई महासभा के संग्रामपुर ब्लाक अध्यक्ष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज, अमेठी। राष्ट्रीय नाई

उपाध्यक्ष पवन शर्मा फौजी, कोषाध्यक्ष राजकुमार शर्मा,



महासभा शाखा जनपद अमेठी के द्वारा ब्लॉक संग्रामपुर में ब्लॉक इकाई का गठन किया गया जिसमें सर्व सम्मत से रमापति शर्मा को ब्लॉक अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय नाई महासभा के जिला अध्यक्ष माननीय रामबरन शर्मा,

बैंक के आस पास उचक्कों का गिरोह सक्रिय, बुजुर्ग के पैसे पर लगाई संघ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। जनपत प्रयागराज के नैनी थाना अन्तर्गत थाने से महज 500 मीटर की दूरी पर भारतीय स्टेट बैंक की शाखा हैं जहां की आय दिन छुट्टु घटनाएं होती रहती हैं। ताजा मामला एक सीनियर सिटिजन 'महेंद्र अरोरा' 84 वर्ष जो की एडीए निवासी हैं और पूर्व में वह स्वयं बैंक कर्मी थे के साथ ठगी का हैं। बताते चले की 'महेंद्र अरोरा' अपने पुत्र के साथ भारतीय स्टेट

बैंक की नैनी शाखा गए थे और वहां पैसे निकाले जो की उन्होंने अपने पुत्र को सुपुर्द कर दिया व घर से साथ लाये पैसे लेकर बैठे को विदा कर बैंक के सामने से ऑटो पकड़ लिए जिसके उपरांत ड्राइवर व खलासी में बातों में उलझा कर उनके जेब में ब्लेड चला दिया। यह महसूस होते ही जब महेंद्र जी ने दिखने को बोला तो बुजुर्ग को रस्ते में ही उतार कर ड्राइवर व खलासी नौ दो ग्यारह हो लिए।

पंखे से लटकती मिली विवाहिता, मौत के बाद मायके वालों ने लगाया हत्या का आरोप,पिता ने पति समेत पांच लोगों के खिलाफ दी तहरीर, चार पहिया वाहन मांगने का लगाया आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कोपागंज/मऊ। थाना क्षेत्र के काछी कला गांव में मंगलवार



तड़के एक विवाहिता संदिग्ध परिस्थितियों में पंखे से लटकती मिली। घरवालों की नजर पड़ने पर आनन-फानन में उसे सामुदायिक स्वास्थ्य वेंद्र कोपागंज ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलने पर मायके वाले भी मौके पर पहुंच गए और ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप लगाते हुए हंगामा करने लगे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका की पहचान पूजा

चौहान (26) के रूप में हुई है। उसके पति उमेश चौहान के बारे में बताया गया कि वह काफी

रुपये और बूलेट बाइक दहेज में दी गई थी। इसके बावजूद ससुराल पक्ष के लोग चार पहिया वाहन की मांग को लेकर पूजा को आए दिन प्रताड़ित करते थे और जान से मारने की धमकी देते थे। तहरीर के मुताबिक, पांच अक्तूबर की रात करीब एक बजे पूजा ने फोन पर अपने पिता से बातचीत की थी। उसने बताया था कि ससुराल वाले उसे जान से मारने की धमकी दे रहे हैं।

इसके बाद मंगलवार सुबह उसकी मौत की सूचना मिली। पिता का आरोप है कि जब वह बेटी की ससुराल पहुंचे तो पूजा मृत अवस्था में मिली। घटना के बाद मायके पक्ष के लोगों ने हत्या का आरोप लगाते हुए हंगामा किया।

मौके पर पहुंची पुलिस ने लोगों को शांत कराया और शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पिता ने पुलिस से मामले में मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है। थानाध्यक्ष राकेश रोहन सिंह का कहना है कि तहरीर, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच में सामने आए तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नानपारा-नेपालगंज रोड से अब दौड़ेगी माल,दुलाई की पूरी रेक. कारोबारियों को बड़ी राहत! नेपाल और सीमावर्ती क्षेत्रों के व्यापार को मिलेगा रेल परिवहन का नया सहारा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। नेपाल और भारत-नेपाल सीमा से जुड़े व्यापारियों के लिए बड़ी राहत की खबर है।

पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल ने नानपारा और नेपालगंज रोड स्टेशनों के गुड्स शेड को पूर्ण रेक के आवक-जावक माल यातायात के लिए खोल दिया है। अब व्यापारी एक साथ बड़ी मात्रा में माल मंगा और भेज सकेंगे। रेलवे की इस सुविधा से थोक कारोबार, औद्योगिक आपूर्ति और सीमावर्ती क्षेत्रों में माल परिवहन अन्य जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति में भी रेल परिवहन अहम भूमिका निभा सकेगा। रेलवे के इस कदम से माल की आवक-जावक बढ़ने के साथ स्थानीय स्तर पर परिवहन और लॉजिस्टिक्स गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। गुड्स शेड पर लोडिंग-अनलोडिंग, माल की

नेपाल और भारत-नेपाल सीमा क्षेत्र में कारोबार करने वाले व्यापारियों, उद्योगों तथा थोक



माल ग्राहकों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। निर्माण सामग्री, कृषि उत्पाद, खाद्य सामग्री समेत अन्य जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति में भी रेल परिवहन अहम भूमिका निभा सकेगा। रेलवे के इस कदम से माल की आवक-जावक बढ़ने के साथ स्थानीय स्तर पर परिवहन और लॉजिस्टिक्स गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। गुड्स शेड पर लोडिंग-अनलोडिंग, माल की

हैंडलिंग, भंडारण और परिवहन जैसी गतिविधियां बढ़ने से रोजगार और कारोबार के नए अवसर भी पैदा होंगे। रेलवे प्रशासन ने नेपाल और सीमावर्ती क्षेत्र के व्यापारियों, उद्योगों तथा माल ग्राहकों से अपनी जरूरत के मुताबिक पूर्ण रेल सुविधा का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की है। रेलवे का मानना है कि बड़ी मात्रा में माल की दुलाई के लिए रेल परिवहन को अपनाने से कारोबारियों को सुविधाजनक और प्रभावी परिवहन विकल्प मिलेगा। पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल की यह पहल न केवल माल परिवहन की क्षमता बढ़ाएगी, बल्कि नेपाल और सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यापारिक गतिविधियों को भी नई रफ्तार दे सकती है। इस संबंध में जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु राव ने मीडिया को जानकारी दी।

नगर पंचायत सलोन उप निर्वाचन में मतदान एवं मतगणना को लेकर दिशा-निर्देश जारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) रायबरेली सरनीत कौर ब्रोका ने बताया है कि राज्य निर्वाचन, माह सितम्बर/अक्टूबर, 2026 के अन्तर्गत नगर पंचायत सलोन के रिक्त अध्यक्ष पद पर सविरोध उप निर्वाचन हेतु दिनांक 13 अक्टूबर 2026 को निर्धारित मतदान स्थलों पर होने वाले मतदान तथा 15 अक्टूबर 2026 को सर्वोदय विद्यापीठ इण्टर कालेज, सलोन जनपद रायबरेली पर होने वाली मतगणना कार्यवाही को सफुल, निर्विघ्न एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिए आयोग द्वारा दिशा निर्देश जारी किये गये हैं। उन्होंने बताया है कि मतदान दिवस पर उम्मीदवारों, उनके अभिकर्ताओं और मतदाताओं का मोबाइल फोन तथा तरल पदार्थ लेकर मतदान स्थल के 100 मीटर की परिधि में प्रवेश निषेध रहेगा। मतगणना की पूरी अवधि के दौरान उम्मीदवारों और उनके अभिकर्ताओं का मोबाइल फोन तथा तरल पदार्थ लेकर मतगणना स्थल पर भी प्रवेश प्रतिबन्धित रहेगा। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि यह प्रतिबन्ध इच्छुटी पर लगे कार्मिकों पर लागू नहीं होगा। मतदान अभिकर्ताओं को पोलिंग स्टेशन के बाहर बरामदे या ऐसे स्थान पर बैठाया जा सकता है, जहाँ से वे मतदान करने जा रहे मतदाता को भली-भाँति देख सकें और बाहर से ही पोलिंग स्टेशन के अन्दर हो रही पूरी प्रक्रिया भी उन्हें दिखाई पड़ती रहे। यदि किसी अभिकर्ता को किसी मतदाता के बारे में या अन्य कोई आपत्ति करना हो तो वे पीठासीन अधिकारी से लिखित या मौखिक आपत्ति कर सकता है तथा समय समय पर मतदान की स्थिति भी ज्ञात कर सकता है, जिसके लिए उन्हें प्रवेश करने से न रोका जाये। मतदान के आरम्भ में मतदान के लिए मतपेटी तैयार

अवैध कच्ची शराब के विरुद्ध आबकारी विभाग की कार्रवाई, 20 लीटर शराब बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। आबकारी आयुक्त के



निर्देशों एवं जिलाधिकारी के आदेश के अनुपालन में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत आबकारी विभाग द्वारा कार्रवाई की गई। उप आबकारी आयुक्त, लखनऊ प्रभार के मार्गदर्शन एवं जिला आबकारी अधिकारी, रायबरेली के नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-1 प्रशांत कुमार

ग्राम कोरिहार में कच्ची शराब बनाने के अड्डे एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी गई।

दबिश के दौरान 20 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गई तथा लगभग 300 लीटर लहलहे मौके पर नष्ट किया गया।

कार्रवाई के दौरान आबकारी अधिनियम के अंतर्गत 02 अभियोग पंजीकृत किए गए।

वाराणसी में कबड्डी प्रतियोगिता में बालक-बालिकाओं ने दिखाया दमखम, 70वीं जनपदीय माध्यमिक विद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता का हुआ भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरहुआ/वाराणसी। बच्चे ही देश के भविष्य हैं। उन्हें शिक्षा के साथ खेल सहित हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। अच्छे स्वास्थ्य और बेहतर भविष्य के लिए खेलों में प्रतिभाग करना बेहद जरूरी है। खेल से बच्चों में शारीरिक क्षमता के साथ अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास होता है। उक्त बातें शर्मिला इंटरमीडिएट कॉलेज, पुआरी खुर्द, हरहुआ में आयोजित 70वीं जनपदीय माध्यमिक विद्यालयीय बालक-बालिका कबड्डी प्रतियोगिता के दौरान कही गईं। शर्मिला इंटरमीडिएट कॉलेज

पुआरी खुर्द में 5 एवं 6 अक्टूबर को दो दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें वाराणसी जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से आए 14, 17 एवं 19 वर्ष आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। आयोजन में अपने खेल कौशल व दमखम का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का शुभारंभ उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री अमल राजभर एवं अजयरा विधानसभा क्षेत्र के विधायक त्रिभुवन राम ने दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत कर अतिथियों का स्वागत किया। इसके बाद विभिन्न

महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव में खेलकूद दिवस का भव्य आयोजन, विभिन्न प्रतियोगिताओं में बच्चों ने दिखाया उत्साह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। महाराजा अग्रसेन जी की 5180वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जयंती महोत्सव के द्वितीय चरण में



अग्रवाल सुहृद समाज, रायबरेली द्वारा एस.जे.एस.पब्लिक स्कूल, कचहरी रोड में खेलकूद दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विभिन्न खेल एवं मनोरंजक प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता (प्रथम वर्ग - प्रथम इश्चिक, द्वितीय प्रवर्ग, तृतीय लवयांश, द्वितीय वर्ग - प्रथम कृष्णा, द्वितीय अख्यान एवं तृतीय रूद्रविक अग्रवाल) शुभ लाभ प्रतियोगिता प्रथम अद्वितीय द्वितीय पल्लवी, तृतीय नेहा एवं अविशी, चित्रकला प्रतियोगिता, प्रथम वर्ग - प्रथम पुरस्कार धैर्य अग्रवाल, द्वितीय पुरस्कार देवांश मित्तल तृतीय पुरस्कार नविका मित्तल, द्वितीय वर्ग - प्रथम पुरस्कार मायरा मित्तल, द्वितीय पुरस्कार काश्वी जैन तृतीय पुरस्कार आन्या अग्रवाल तृतीय वर्ग - प्रथम पुरस्कार आशी अग्रवाल, द्वितीय पुरस्कार अश अग्रवाल तृतीय पुरस्कार भव्या अग्रवाल चतुर्थ वर्ग - प्रथम पुरस्कार नित्या

ट्रैक किनारे पसरी गंदगी पर चला सफाई का 'झाड़ू' स्टेशनों पर डीप क्लीनिंग से चमकी यात्री सुविधाएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। स्वच्छता पखवाड़ा-2026 के तहत पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल में रेलवे परिसरों



से लेकर ट्रैक किनारे तक व्यापक सफाई अभियान चलाया जा रहा है। छह से आठ अक्टूबर तक चलने वाले ट्रैक साइड क्लीनिंग ड्राइव के तहत सोमवार को बादशाहनगर, लखनऊ जंक्शन, सिद्धार्थनगर, मैलानी जंक्शन, लखीमपूर, गोरखपुर जंक्शन और बस्ती समेत विभिन्न स्टेशनों पर सफाई अभियान चलाकर यात्री सुविधाओं को स्वच्छ और बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन और वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/ईएचएचएम महेंद्र सिंह के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के दौरान स्टेशनों के प्लेटफॉर्म, फुट ओवरब्रिज, प्रतीक्षालय और

ट्रैक किनारे विशेष सफाई अभियान चलाया गया। मैलानी जंक्शन पर सर्वलूटिंग एरिया, वाटर बुथ, कैंटीन, पैनल रूम, प्लेटफॉर्म और ट्रैक की सघन सफाई कराई गई। वहीं लखीमपूर, गोरखपुर जंक्शन और बस्ती सहित अन्य स्टेशनों पर भी यात्री सुविधाओं तथा ट्रैक साइड की गहन सफाई की गई। बस्ती स्टेशन पर रनिंग लाइनों के किनारे लंबे समय से जमा कूड़े को हटाकर कूड़ेदान में एक्त्र किया गया और कचरे का पृथक्करण कर निर्धारित प्रक्रिया के तहत निस्तारण कराया गया। अभियान का उद्देश्य रेलवे परिसर को स्वच्छ रखने के साथ यात्रियों और रेलकर्मीयों में स्वच्छता के

चाहना है। इसी क्रम में डॉ. संजय तिवारी, अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, ऐशबाग के निर्देशन में मुख्य

शौचालयों की गहन सफाई के साथ प्रेशर वाशिंग भी कराई गई। बादशाहनगर, लखनऊ जंक्शन और सिद्धार्थनगर स्टेशनों पर सफाई अभियान चलाकर यात्री सुविधाओं को स्वच्छ और बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन और वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/ईएचएचएम महेंद्र सिंह के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के दौरान स्टेशनों के प्लेटफॉर्म, फुट ओवरब्रिज, प्रतीक्षालय और



समापन समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के लघु एवं सूक्ष्म उद्योग विभाग के मंत्री हसराम विश्वकर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए खेलों को

और स्लो साइकिल रेस में बच्चों ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। लेमन रिंले, गोला फेंक तथा अन्य प्रतियोगिताओं में भी प्रतिभागियों ने शानदार प्रदर्शन किया। अध्यक्ष पवन गुप्ता एवं सचिव पवन अग्रवाल ने कहा कि, 'खेल बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों से प्रेरणा लेते हुए हमारा प्रयास है कि समाज के बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए बेहतर मंच मिले। खेलकूद दिवस में बच्चों की उत्साहपूर्ण भागीदारी बेहद सराहनीय रही।' उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी अभिभावकों, प्रतिभागियों एवं समाज के सदस्यों का आभार व्यक्त किया। जयंती संयोजक मोहित अग्रवाल एवं अमित अग्रवाल ने कहा, 'महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव के प्रत्येक कार्यक्रम को समाज को जोड़ने और नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों से जोड़ने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। खेलकूद दिवस में बच्चों का उत्साह देखकर हम सभी अत्यंत प्रसन्न हैं।' उन्होंने कहा कि आने वाले कार्यक्रमों में भी समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में रचित मुरारका, पीयूष अग्रवाल एवं मोनू अग्रवाल एवं मंच संचालन देवांग सिकरिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों, अभिभावकों, विजालय प्रबंधन एवं सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। अग्रवाल सुहृद समाज, रायबरेली की ओर से कहा गया कि महाराजा अग्रसेन जी की जयंती के अवसर पर आयोजित यह महोत्सव सामाजिक एकता, सेवा, संस्कार और नई पीढ़ी की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

प्रति जागरूकता बढ़ाना भी है। इसी क्रम में डॉ. संजय तिवारी, अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, ऐशबाग के निर्देशन में मुख्य

शौचालयों की गहन सफाई के साथ प्रेशर वाशिंग भी कराई गई। बादशाहनगर, लखनऊ जंक्शन और सिद्धार्थनगर स्टेशनों पर सफाई अभियान चलाकर यात्री सुविधाओं को स्वच्छ और बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन और वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/ईएचएचएम महेंद्र सिंह के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के दौरान स्टेशनों के प्लेटफॉर्म, फुट ओवरब्रिज, प्रतीक्षालय और

ट्रैक किनारे विशेष सफाई अभियान चलाया गया। मैलानी जंक्शन पर सर्वलूटिंग एरिया, वाटर बुथ, कैंटीन, पैनल रूम, प्लेटफॉर्म और ट्रैक की सघन सफाई कराई गई। वहीं लखीमपूर, गोरखपुर जंक्शन और बस्ती सहित अन्य स्टेशनों पर भी यात्री सुविधाओं तथा ट्रैक साइड की गहन सफाई की गई। बस्ती स्टेशन पर रनिंग लाइनों के किनारे लंबे समय से जमा कूड़े को हटाकर कूड़ेदान में एक्त्र किया गया और कचरे का पृथक्करण कर निर्धारित प्रक्रिया के तहत निस्तारण कराया गया। अभियान का उद्देश्य रेलवे परिसर को स्वच्छ रखने के साथ यात्रियों और रेलकर्मीयों में स्वच्छता के

चाहना है। इसी क्रम में डॉ. संजय तिवारी, अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, ऐशबाग के निर्देशन में मुख्य

शौचालयों की गहन सफाई के साथ प्रेशर वाशिंग भी कराई गई। बादशाहनगर, लखनऊ जंक्शन और सिद्धार्थनगर स्टेशनों पर सफाई अभियान चलाकर यात्री सुविधाओं को स्वच्छ और बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन और वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/ईएचएचएम महेंद्र सिंह के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के दौरान स्टेशनों के प्लेटफॉर्म, फुट ओवरब्रिज, प्रतीक्षालय और

पाटन डाक टिकट प्रदर्शनी 'पाटनपेक्स-2026' का पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव और सिद्धपुर विधायक बलवंतसिंह सी. राजपूत ने किया उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा



राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवम् उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। हर डाक टिकट के पीछे एक कहानी छुपी हुई है और इस कहानी से आज की जैन-जैड और जैन-एल्फा युवा पीढ़ी को जोड़ने की जरूरत है। उक्त उद्घाटन उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने गुजरात में पाटन जनपद में आयोजित प्रथम दो दिवसीय जिला स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी 'पाटनपेक्स-2026' का गोकुल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, सिद्धपुर के दीक्षांत सभागार में 5 अक्टूबर, 2026 को उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। इससे पहले बतौर मुख्य अतिथि पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव और सिद्धपुर विधायक श्री बलवंतसिंह सी. राजपूत ने फीता काटकर व दीप



प्रज्वलन कर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। प्रदर्शनी में देश-दुनिया में जारी तमाम डाक टिकटों और फिलेटलिक आइटम्स के कुल 86 फ्रेम लगाए गए हैं। इस अवसर पर डाक विभाग द्वारा पाटन की विरासत एवं गांधी आश्रम, झीलिया पर विशेष आवरण व विशेष विरूपण भी जारी किए गए। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि 'पाटनपेक्स' डाक टिकट प्रदर्शनी का प्रमुख उद्देश्य युवाओं में फिलेटली के प्रति सौंध उत्पन्न करना और उन्हें इसके शैक्षणिक व सांस्कृतिक महत्व से परिचित कराना है। पाटन एक लंबे समय तक गुजरात की राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र रहा। ऐसे में 'पाटन की विरासत' पर आज जारी विशेष डाक आवरण में रानी की वाव, रुद्र महालय, बिंदु सरोवर, सहस्रलिंग तालाब और पाटन पटोला को एक साथ दर्शाया गया है। जिससे पाटन की यह गौरवशाली धरोहर देश-विदेश तक पहुंच

श्री अन्न महोत्सव में मिलेट्स से बने पौष्टिक व्यंजनों का प्रदर्शन, पोस्टर एवं रंगोली प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों ने दिया जागरूकता का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत कृषि विभाग के तत्वाधान में राजकीय इंटर कॉलेज के मैदान में मिलेट्स मेला /श्री अन्न रेंसिपी प्रतियोगिता एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

संबंधी गुणों एवं उपयोगिता के संबंध में लोगों को विस्तृत जानकारी प्रदान कर जागरूक किया गया। उपस्थित लोगों को बताया गया कि श्री अन्न को दैनिक आहार में शामिल कर संतुलित एवं पौष्टिक खान-पान को बढ़ावा दिया जा सकता है। साथ ही श्री अन्न से तैयार विभिन्न व्यंजनों के माध्यम से इसके उपयोग को सरल, स्वादिष्ट एवं आकर्षक बनाने के बारे में भी जानकारी दी गई। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम के सफल एवं वृद्ध आयोजन के लिए कृषि विभाग सहित सभी संबंधित विभागों, संस्थाओं एवं प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग कर पोस्टर, रंगोली, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से उत्कृष्ट कार्य करने की सराहना की। जिलाधिकारी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से श्री अन्न, स्वस्थ जीवनशैली एवं जनजागरूकता से जुड़े संदेश दिए, जिसकी उपस्थित लोगों द्वारा सराहना की गई। कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न/मिलेट्स के महत्व, पोषण

सकें। पाटन स्थित 'रानी की वाव' और 'पाटन पटोला' पर भारत सरकार द्वारा वर्ष 2017 और

किंग' के रूप में जाना जाता है। सिद्धपुर विधायक श्री बलवंतसिंह सी. राजपूत ने कहा कि, यह प्रदर्शनी डाक टिकटों के माध्यम से भारत की विविधता और गौरवशाली अतीत को समझने का अवसर प्रदान करती है। फिलेटली इतिहास और वर्तमान के बीच एक सुंदर सेतु का कार्य करती है। देश और प्रदेश के समृद्ध व गौरवशाली इतिहास से परिचय करने में डाक टिकटों का अहम स्थान है। उन्होंने पाटन जनपद में पहली बार डाक टिकट प्रदर्शनी करने और युवाओं के बीच फिलेटली को बढ़ावा देने के लिए डाक विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

गोकुल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के डीन डॉ. अरविंदकुमार चौहान ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए फिलेटली एक शौक के साथ-साथ ज्ञानवर्धन का भी सशक्त

माध्यम है। पाटन मंडल के अधीक्षक डाकघर श्री आर.ए. गोस्वामी ने बताया कि प्रदर्शनी 5 व 6 अक्टूबर को सुबह 10:30 से शाम 6 बजे तक लोगों के अवलोकनार्थ खुली रहेगी। प्रदर्शनी के दौरान स्कूली विद्यार्थियों के लिए पत्र-लेखन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, डाक टिकट डिजाइन इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। डाक टिकटों पर अपनी और अपने प्रियजनों की फोटो छपवाने की सुविधा हेतु 'माई स्टैम्प' का विशेष काउंटर भी आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा। इस अवसर पर सहायक निदेशक अल्पेश शाह, डीन, गोकुल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, डॉ. अरविंदकुमार चौहान एवं डॉ. विपुलकुमार डाम्बी,



जैव विविधता, स्पोर्ट्स, अंतरिक्ष से लेकर तमाम समसामयिक विषयों, घटनाओं आदि से खूबसूरत हो सकेगी। यह युवा पीढ़ी को मोबाइल व सोशल मीडिया की लत से परे फिलेटली जैसी रचनात्मक हॉबी से जुड़ने में योगदान देगी। फिलेटली को 'किंग आफ हॉबी व हॉबी आफ

मेनेजर, गांधी आश्रम, जिलौया, लालजीभाई एम. देसाई, सहायक अधीक्षक के. बालासुब्रमण्यम, बिरंग शाह, डाक निरीक्षक शाहनवाज घांघी, नेहल पटेल, जितेंद्र अदालिया सहित तमाम अधिकारी, फिलेटलिस्ट और विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व विद्यार्थी उपस्थित रहे।



आकर्षक रंगोली का भी निरीक्षण किया तथा बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके रचनात्मक प्रयासों की सराहना की। इसके पश्चात् जिलाधिकारी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से श्री अन्न, स्वस्थ जीवनशैली एवं जनजागरूकता से जुड़े संदेश दिए, जिसकी उपस्थित लोगों द्वारा सराहना की गई। कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न/मिलेट्स के महत्व, पोषण



वास्थ्य विभाग के सहायक प्रोफेसर रैमस ओएस्टरगार्ड नील्सन द्वारा किया गया था और हाल ही में ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पेक्ट्रल मेडिसिन में प्रकाशित हुआ। इस अध्ययन ने धावकों के जोरों को लेने के तरीके और कारणां को लेकर एक बेहतरीन समझ प्रदान की। सर्वे में पाया गया कि अधिकतर धावकों को चोट लग रही है, उन उन्होंने अपनी सबसे लंबी रही दौड़ की दूरी को तीन दिन के भीतर ही दूसरे बार बड़ा दिया। 18 महीने की शोध-अधि में चोटल हुए 35 कीमती प्रतिभागियों की करारी निगरानी करने वाले सर्वे में कहा गया कि



इतिहास में जिनके नाम नहीं हैं, उनमें भी नायकों को तलाशें

हम अक्सर चे वरेरा और महात्मा गांधी जैसे नायकों की प्रशंसा करते हैं, जिन्होंने आराम की ज़िदगी छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए काम किया। लेकिन वैसे लोग भी नायक होते हैं, जिन्होंने खुद गरीबी में रहते हुए दूसरों की फ़िक्र की और उनकी मदद करने के जतन किए। ऐसे लोग मुझे तो बहुत मिले हैं- मजदूर, रिक्शावाले, स्वास्थ्यकर्मी और अन्य। उनमें से बहुतों ने ज्यादा पढ़ाई नहीं की होती

है। लेकिन मैंने उनमें सहानुभूति, शोषण की समझ और न्याय की गहरी भावना पाई है। आप उन्हें ‘सहज-क्रांतिकारी’ कह सकते हैं। क्रांतिकारी से मेरा मतलब यह नहीं है कि वे व्यवस्था को उखाड़ फेंकने की कोशिश कर रहे हैं। मेरा मतलब यह है कि उन्होंने रूढ़ियों की बेड़ियां तोड़ीं और अपने तरीके से एक नई दुनिया बनाने के लिए काम किया।

उनमें से एक थे नियामत अंसारी, जो झारखंड के मणिका

प्रखंड में रहते थे। जब मैं उनसे करीब बीस साल पहले मिला था, तब वे अपने दोस्त भूखन के साथ मनरेगा में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे थे। नियामत मुसलमान थे और भूखन आदिवासी, लेकिन दोनों सगे भाइयों जैसे थे। दोनों नियामत की पुरानी, खटारा मोपेड पर बैठकर गांव-गांव जाते थे और मनरेगा के कामों की जांच करते थे। भूखन और नियामत ने कई भ्रष्ट ठेकेदारों का भंडाफोड़ किया

था। जाहिर है, वैसे ठेकेदार उनसे नाराज हो गए और उनसे बदला लेने में लग गए। नियामत और भूखन को झूठे केस में फंसा दिया गया। दोनों को कुछ समय जेल में भी बिताना पड़ा। जेल में उनके साथ जो हुआ, उसके बारे में उनकी बातें तो मैं कभी नहीं भूलूंगा। वहां रात में कैदियों को टॉयलेट जाने की भी सुविधा नहीं थी।लेकिन जेल से छूटते ही नियामत और भूखन ने फिर से भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष शुरू कर दिया। ठेकेदार उनकी हत्या की साजिश में लग गए। 2 मार्च 2011 को ठेकेदारों के इशारे पर माओवादियों के एक दस्ते ने नियामत को पीट-पीटकर मार डाला। भूखन ने एक खेत में छिपकर अपनी जान बचाई। ऐसे ‘सहज-क्रांतिकारियों’ में कई महिलाएं भी हैं। मणिका में ही मैं ऐसी कई महिलाओं को जानता हूं। उनमें से एक थीं श्यामा सिंह। नियामत की तरह श्यामा भी अत्याचार करने वालों के सामने खड़े होने से नहीं डरती थीं। उन्होंने मणिका की कई महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने की प्रेरणा दी।

2015 में इन महिलाओं ने बहुत कम पैसे खर्च करके ग्राम पंचायत के मुखिया का चुनाव जीतने में श्यामा की मदद की थी। लेकिन ज्यादातर मुखियाओं के विपरीत, श्यामा ने पद का इस्तेमाल पैसा कमाने के लिए नहीं किया। पांच साल बाद भी उनका घर लगभग वैसा ही रहा जैसा पहले था, और उनके पास सस्ती स्कूटी के अलावा कोई और वाहन नहीं था। जब नियामत को आधी रात में पीटा गया था, तब मणिका थाना पुलिस घटनास्थल पर नहीं पहुंची थीं। ऐसे में श्यामा ही हिम्मत करके 10 किलोमीटर दूर अपने घर से निकलकर नियामत को अस्पताल ले जाने के लिए वहां पहुंच गईं। जबकि उस समय श्यामा नियामत से नाराज थीं। लेकिन उन्होंने अपनी नाराजगी भुला दी और उनकी मदद के लिए दौड़ी चली आई, क्योंकि नियामत उनके साथी थे। 18 जुलाई 2026 को घर में झाड़ू लगाते समय श्यामा को नाग ने काट लिया। कुछ दिन बाद बारिश में उनका अंतिम संस्कार हुआ। गांव के हर घर से कोई न कोई वहां आया।

भ्रष्टाचार या सुविधा शुल्क आप खुद तय करें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हम हमेशा से ही

हम सभी बेकसूर लोगों के लिए अन्याय होता है, लेकिन इन सब



जानते हैं कि हमारी व्यवस्था में जो व्याप्त भ्रष्टाचार है वो समाज को दीमक की तरह खोखला करता जा रहा है। बहुत से अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षणों में भ्रष्टाचार की वैश्विक सूची में हमारी स्थिति शर्मसार करने वाली है, सरकारों और समाज के स्तर पर भ्रष्टाचार को लेकर हमारी उदासीनता बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि समाज में किसी भी तरह का भ्रष्टाचार

के बावजूद भी हम सब भ्रष्टाचार के खिलाफ तब तक आवाज नहीं उठाते जब तक हम स्वयं भ्रष्टाचार से पीड़ित ना हो अन्यथा हम भ्रष्टाचार को नजर अंदाज करते रहते हैं। बल्कि बहुत से ऐसे लोग हैं जो भ्रष्टाचार को सुविधा शुल्क के रूप में प्रस्तुत करने की गंदी कोशिश भी करते हैं । हमारे समाज में भ्रष्टाचार का वायरस व्यवस्थाओं की रगों में इस कदर घर कर चुका है कि इसे खत्म कर पाना नामुमकिन

दक्षिण एशिया के कई देशों में बदलाव के स्वर उठ रहे हैं

बीते पांच वर्षों में दक्षिण एशिया में युवाओं के नेतृत्व वाले 6 ऐसे सत्ता-विरोधी आंदोलन देखे गए हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य को

श्रीलंका में ज्यादा हिंसा नहीं हुई। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने दबाव में इस्तीफा दे दिया। पाकिस्तान में मई 2023 में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की

बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शन किए। सरकार ने इसे बलपूर्वक दबाते की कोशिश की, लेकिन प्रदर्शनकारियों ने भी जवाबी प्रतिरोध किया और अंततः



बुनियादी रूप से बदला है। इन आंदोलनों में कई समानताएं थीं- सभी में युवा आकांक्षाओं की झलक थी, ये डिजिटल रूप से संगठित थे, आर्थिक निराशा और सत्ता-कुलीन वर्ग से मोहभंग दिखाई दिया था। लेकिन निराशा राजनीतिक व्यवस्थाओं में ये आंदोलन हुए, उन्होंने इन अस्तोषों को अलग-अलग तरीके से मैनेज किया। इसीलिए आंदोलनों के नतीजे भी अलग रहे। इस कहानी की शुरुआत म्यांमार से होती है, जहां फरवरी 2021 में सेना ने लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकार को सत्ता से हटा दिया और व्यापक विरोध-प्रदर्शन शुरू हो गए। नई सत्ता ने प्रदर्शनकारियों पर हिंसक कार्रवाई शुरू कर दी। लोकतंत्र की शांतिपूर्ण बहाली का रास्ता बंद हो जाने के बाद युवाओं के सामने सिविलियन डिफेंस फोर्स बनाने और जातीय सशस्त्र संगठनों के साथ मिलकर लड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। नतीजतन, गृहयुद्ध छिड़ गया। मार्च 2022 में श्रीलंका का अरागालया आंदोलन आर्थिक बदहाली से पैदा हुआ। पेट्रोल पंपों पर ईंधन खत्म हो गया था, लंबे समय तक बिजली कटौती और आर्थिक दिवालियेपन की स्थिति ने राजपक्षे परिवार की सत्ता की वैधता खत्म कर दी। यह परिवार दो दशकों से देश की राजनीति पर हावी था। विरोध-प्रदर्शन पूरे द्वीप में फैल गए और आखिरकार प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति भवन तक पर कब्जा कर लिया। लेकिन म्यांमार के विपरीत

गिरफ्तारी के बाद दंगे भड़क उठे थे। यह ऐसा मामला था, जिसमें एक लोकप्रिय नेता के पीछे एक जनवादी आंदोलन लामबंद होकर सेना के प्रभुत्व को चुनौती दे रहा था। जवाब में सेना तैनात की गई, इंटरनेट बंद कर दिया गया और विाष के औपचारिक पार्टी स्ट्रक्चर को समाप्त कर दिया गया। बढ़ते राजनीतिक अलगाव की कीमत चुकाकर भी पाकिस्तान की ‘हाइब्रिड’ शासन-व्यवस्था को बचाया गया। बांग्लादेश में जुलाई 2024 का विद्रोह इस बात का उदाहरण था कि किस तरह एक सीमित नीतिगत विवाद- सरकारी नौकरियों में कोटा-व्यवस्था के खिलाफ छात्रों का विरोध- जनांदोलन में बदल सकता है। शेख हसीना की निरंकुश सरकार के खिलाफ आंदोलन बढ़ा तो कर्फ्यू लगा दिया गया, सेना तैनात हुई और उल्लंघन करने वालों को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए। लेकिन खरब सेना ने भी आदेश मानने से इनकार कर दिया तो हसीना देश छोड़कर भाग गई और अंतरिम सरकार के गठन का रास्ता खुल गया। नेपाल में सितम्बर 2025 के विरोध-प्रदर्शनों का निशाना कोई एक नेता नहीं, बल्कि पूरा राजनीतिक वर्ग था, जो एक दशक से प्रधानमंत्री की कुर्सी को लेकर ‘म्यूजिकल चेयर’ खेल रहा था। जबकि दूसरी ओर, युवा बेरोजगारी और अवसरों की कमी से जूझ रहे थे। सरकार द्वारा सोशल मीडिया पर लगाए बैं न ने निराशा जैन-जी को भड़का दिया। नेपाली युवाओं ने वीपीएन और दूसरे एप्स का इस्तेमाल करते हुए

संसदीय ढांचे को नष्ट किए बिना राजनीतिक कुलीन वर्ग को सत्ता से बाहर कर दिया। 35 वर्षीय युवा को प्रधानमंत्री चुना गया। और अंततः गत जुलाई में भारत में भी विद्यार्थियों के नेतृत्व वाले व्यापक विरोध-प्रदर्शन हुए। शुरुआत प्रवेश परीक्षाओं में पेपर-लोक के मसले से हुई और फिर रोजगारविहीन आर्थिक वृद्धि को लेकर बढ़ती बेचैन ने इसे व्यापक बना दिया।

लेकिन भारत में इस आंदोलन ने संवैधानिक व्यवस्था के लिए खतरा बनने के बजाय उल्टे उसकी मजबूती को ही प्रदर्शित किया। सरकार ने अहम रियायतें दीं, शिक्षा मंत्री का इस्तीफा स्वीकार किया और प्रशासनिक तथा नीतिगत सुधारों का प्रस्ताव रखा, ताकि विरोध की ऊर्जा को फिर से स्थापित लोकतांत्रिक माध्यमों की ओर मोड़ा जा सके। हाइपरकॉन्क्रीटिविटी और आर्थिक-राजनीतिक अलगाव का कॉम्बिनेशन ताकतवर होता है। डिजिटल दुनिया में गंभी-भारत या पीढ़ी स्थापित ढांचों को बायपास करते हुए बड़े पैमाने पर लोगों को एकत्र कर सकती है। पिछली पीढ़ियों के मुकाबले युवा प्रदर्शनकारी इस भावना से अधिक प्रेरित हैं कि उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं है। वे सरकारी रियायतों से प्रभावित नहीं होते और दमन का सीधे सामना करते हैं।

इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट, शशि थरुर)

पाबंदियों की दीवार को गिराकर खुले दरवाजों वाला देश बने हैं हम

क्या होता अगर दस साल पहले कोई भारतीय लड़की कहती

जब दरवाजे कम हों तो वे सबसे पहले उनके लिए खुलते हैं, जिनके

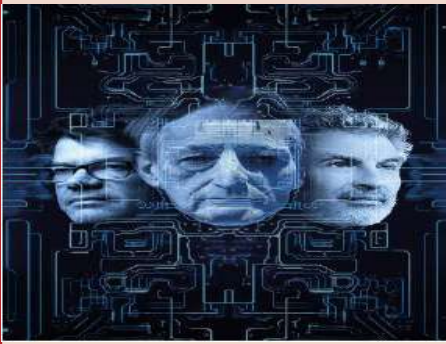
यहाँ पर इस सोच की न्यायसंगतता नजर आती है। 2016 में स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत के समय देश में 350 स्टार्टअप थे। आज इनकी संख्या दो लाख से ज्यादा है इन्होंने बीस लाख से ज्यादा नौकरियां सृजित की हैं। ये अब हर कोने में पहुंच चुके हैं, जिनमें से एक लाख से भी अधिक की शुरुआत महिलाओं द्वारा की गई है। करोंड़ों ऐसे भारतीय जिनके पास कभी बैंक खाता नहीं था, उन्हें इस दायरे में लाया गया, जहां एक साधारण फोन ही बैंक बन गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने उस व्यवस्था को बदला, जिसके तहत छात्र को किसी एक विषय में दाखिल करा दिया जाता था। अब छात्र ऐसे विषयों को पढ़ सकते हैं, जिन्हें पहले कभी साथ नहीं पढ़ाया जाता था, किसी डिग्री को बीच में छोड़कर वहीं से दोबारा शुरू कर सकते हैं और देश से बाहर जाए बिना ही विश्वस्तरीय पढ़ाई कर सकते हैं, क्योंकि दुनिया भर के विश्वविद्यालय यहां अपने कैम्पस खोल रहे हैं। यह सब एक ही बात की ओर इशारा करता है- एक ऐसा देश जिसने आखिरकार अपने युवाओं पर भरोसा करने का फैसला किया है।

नरेंद्र मोदी ने भारत के युवाओं को कभी भी ऐसी समस्या नहीं माना, जिसे बस मैनेज करना हो या जिसे उन्होंने सिर्फ वोट बैंक समझा हो। वे युवाओं से बराबरी के स्तर पर बात करते हैं। यही इस नेतृत्व का वास्तविक मापदंड है। यह कोई योजना या आंकड़ा नहीं, बल्कि एक युवा भारतीय की सोच और कल्पना के दायरे में आया बदलाव है। अब किसी युवा भारतीय के लिए केवल यही सवाल नहीं रह गया है कि उसे सपने देखने की अनुमति है या नहीं; अब सवाल यह है कि वह कितनी दूर जाने का इरादा रखता है। पी. वी. सिंधु

क्यों पूरी दुनिया अचानक से मानवता के लिए एआई के खतरों पर बात कर रही है?

अमेरिका में हाल ही काफी सारे स्कूलों वाले न्यूयॉर्क सिटी

अलाइड हों।' यहां 'अलाइड' शब्द पर गौर करें। सिलिकॉन वैली



और लॉस एंजेलस जैसे जिलों ने घोषणा की है कि वे अकादमिक वर्ष 2026-27 में स्टूडेंट्स द्वारा स्कूल वेब डिवाइसेस पर जनरेटिव एआई के इस्तेमाल पर रोक लगाएंगे। क्योंकि दुनिया के सबसे प्रतिभाशाली लोगों को चिंता है कि सावधानी भरे सुरक्षा उपायों के बिना बच्चे चैटजीपीटी जैसे चार साल पुराने प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल जवाब पाने वेब शॉर्टकट के तौर पर करने लगेंगे। वे उन जटिल कॉग्निटिव प्रक्रियाओं को बायपास करेंगे, जो सीखने के लिए आवश्यक हैं। दरअसल, 2003 में- जब मार्क जकरबर्ग ने 'द फेसबुक' का नाम 'फेसबुक' किया ही था, इलॉन मस्क सेंटी-मिलियनेयर नहीं बने थे और सैम ऑल्टमैन स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी से डॉपआउट नहीं हुए थे- तब ऑक्सफोर्ड के एक ब्रिलियंट फिलॉसफर निक बोस्ट्रॉम ने 'एथिकल इश्यूज इन एडवांस्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' शीर्षक से एक पेपर प्रकाशित किया था। उस लंबे रिसर्च पेपर में अप्रत्यक्ष वेतामनी दी गई थी कि 'जब हम खुद से कहीं ज्यादा इंटेलिजेंट चीज बनाते हैं तो हमें बहुत ज्यादा आश्चस्त होना चाहिए कि उसके लक्ष्य हमारे लक्ष्यों के साथ

के सबसे बेहतरीन दिमाग पहले ही एजीआई डिजाइन कर चुके हैं। यानी, आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस। बुनियादी तौर पर एजीआई इंसान के किसी भी इंटेलेक्चुअल काम को कर सकता है। ऐसे मॉडल इंसानी राइटिंग की नकल करने के लिए ट्रेड किए गए हैं।कई लोग तर्क देते हैं कि वे क्रिएटिव नहीं होंगे, इसलिए वास्तव में इंटेलिजेंट भी नहीं होंगे। लेकिन धीरे-धीरे इन एआई को दिए जा रहे टेस्ट चौंकाने वाले नतीजे दे रहे हैं। यह सिर्फ सदियों से इंसानों को उलझाए रखने वाली मैथ्स प्रॉब्लम्स को हल करने तक सीमित नहीं है। सवाल यह है कि क्या उन्होंने 'आरएसआई' विकसित कर लिया है? अब यह 'आरएसआई' क्या है? इसका मतलब है रिकॉर्सिव सेल्फ इम्प्रूवमेंट। विशेषज्ञों का कहना है कि जैसे ही किसी कंप्यूटर के पास अपना एजीआई आ जाता है तो वह एआई (ह्यूमन इंटेलिजेंस) का कम इस्तेमाल करता है। प्रोग्रामर्स के बजाय वह अपना सक्सेसर डिजाइन करने के लिए एजीआई इस्तेमाल करता है। फिर वह सक्सेसर अपना सक्सेसर बनाता है। प्रतिभाशाली लोगों को चिंता है कि देर-सबेर कम से कम आईक्यू के क्षेत्र में तो एक

इंटेलिजेंस विस्फोट जरूर होगा। और हम इंसान उनके लिए वैसे ही बन जाएंगे, जैसे बच्चे हमारे लिए हैं। अब कुछ लोग सोच सकते हैं कि क्या हम एआई को यह नहीं बता सकते कि वह हमें न मारे या हमारे सामने बच्चों जैसा रहे? दुनिया भर के प्रोग्रामर्स ठीक इसी विचार पर काम कर रहे हैं। वे इस प्रक्रिया को हमारी थॉट प्रोसेस के साथ 'अलाइनमेंट' कह रहे हैं और यही निक बोस्ट्रॉम ने 23 साल पहले लिखा था। अब एआई से फटी रिसर्चर्स एलिएजर युडकोव्स्की और नेट सोरेस की 2025 में रिलीज हुई बुक 'डफ एनीवन बिल्ड्स इट, एवरीवन डाइज' ठीक यही चेतावनी देती है। यह आर्टिफिशियल सुपर इंटेलिजेंस मशीनों बनाने के

सुपर-इंटेलिजेंट एआई मानवीय मूल्यों को नहीं अपनाएगा। संभवतः वह अपने खुद के एलियन गोल्स विकसित कर लेगा, जो इंसानी अस्तित्व के खिलाफ होंगे।2. किताब विनाश की राह का खाका बताती है। अगर कोई मशीन इंसानों से ज्यादा स्मार्ट हो जाए तो हम उस पर से नियंत्रण खो देंगे। सुपर-इंटेलिजेंट सिस्टम के साथ कोई संघर्ष पूरी तरह एकतरफा होगा, जिसका नतीजा मानव प्रजाति का तेजी से विनाश होगा।3. दुनिया इस खतरे के लिए पूरी तरह तैयार नहीं है। कंपनियां और देश एडवांस्ड मॉडल बनाने की होड़ में लगे हैं। युडकोव्स्की और सोरेस दुनिया के नेताओं से अपील करते हैं कि बहुत देर होने से



खतरों को बताती है, जो किसी भी इंसान से कहीं ज्यादा स्मार्ट होंगी। किताब को तीन मुख्य हिस्सों में बांटकर बताया गया है कि लेखक क्यों मानते हैं कि एडवांस्ड एआई मानवता को खत्म कर देगा। 1. मॉडर्न एआई सिस्टम्स बड़ी मात्रा में डेटा और कंप्यूटिंग पावर इस्तेमाल करके बनाए जाते हैं। इंसान इनपुट्स को तो ट्यून करते हैं, लेकिन हम आउटपुट्स या इमर्जेंट बिहेवियर्स को पूरी तरह नहीं समझते। लेखकों का तर्क है कि

पहले ही फ्रंटियर एआई का डेवलपमेंट तुरंत कर दिया जाए। अब ये सभी बातें सच हो रही हैं। शायद यही वजह है कि हम सबसे पहले बच्चों को बचाने के लिए एआई पर रोक लगा रहे हैं। फंडा यह है कि मशीन इंटेलिजेंस का कोई भी विस्कोट मानवता के साथ अलाइड होना चाहिए, वरना यह निश्चित ही पूरी मानवता के लिए खतरा बन जाएगा। वसीलिए अचानक से पूरी दुनिया का ध्यान एआई मशीनों पर आ गया है। एन. रघुरामन

भारत में महिलाएं इतनी कम तादाद में क्यों काम करती हैं?

भारत में फीमेल लेबर-फोर्स पार्टिसिपेशन रेट (एफएलपीआर) 35फीसदी है, जो बांग्लादेश (42फीसदी) और फिलीपींस (50फीसदी) जैसे देशों से भी काफी कम है। हालांकि यह दर 2017-18 के 21फीसदी से अधिक है, लेकिन गौर से देखें तो पता चलता है कि इस वृद्धि में 70फीसदी से अधिक योगदान कृषि और निर्वाह-आधारित क्षेत्रों (सब्सिस्टेंस सेक्टर्स) का है, जिसमें बड़े पैमाने पर छिपी हुई बेरोजगारी भी शामिल है। विकसित देशों की तुलना में हमारे एफएलपीआर के अंतर को पाटना महज लैंगिक समानता के लिए ही अहम नहीं है। इससे आर्थिक विकास में भी काफी फायदा मिल सकता है। इससे भारत अपनी जीडीपी में 700 अरब से 1.4 ट्रिलियन डॉलर तक की अतिरिक्त वृद्धि कर सकता है। लेकिन भारत में इतनी कम महिलाएं क्यों काम करती हैं? इसे लेकर हुए अध्ययनों में आपूर्ति पक्ष की बाधाओं पर फोकस किया गया है, खासकर सामाजिक नियम- जिनमें अनपेक्ष केयर वर्क्स का असमान वितरण, आवागमन व शिक्षा पर लगी पाबंदियां, कमजोर कानूनी सुरक्षा तथा बाल विवाह जैसी प्रथाएं शामिल हैं। मौजूद साक्ष्य इसकी पुष्टि भी करते हैं। यूपन वुमन की एक तकनीकी रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय महिलाएं दिन का 22फीसदी समय अनपेक्ष केयर वर्क्स में बिताती हैं, जबकि पुरुषों के लिए यह आंकड़ा दिन का करीब 6.4फीसदी है। नतीजतन, नीतियों का बड़ा हिस्सा पहले से मौजूद नौकरियों में ही महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने पर केंद्रित रहा है। बीते कुछ दशकों में कई बाधाएं हटने के बावजूद गैर-कृषि लेबर फोर्स में महिलाओं की हिस्सेदारी में भी बदलाव नहीं हुआ है। भारत में आमतौर पर महिलाओं की कम एफएलपीआर के लिए शिक्षा को भी कारण बताया जाता है। लेकिन अब हर स्तर पर महिलाओं के नामांकन की दर पुरुषों के बराबर या उससे अधिक हो चुकी है। 2005-06 के बाद से बाल विवाह भी लगभग आधे हो गए हैं। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भी बढ़ी है। 1996 में महिलाओं का मतदान पुरुषों की तुलना में करीब 9फीसदी कम था, लेकिन 2024 तक यह पुरुषों से भी आगे

निकल गया। ऐसे में अगर केवल सामाजिक नियम ही बाधा होते तो फिर प्रोडक्टिव एम्प्लॉयमेंट में महिलाओं की स्थिति में स्पष्ट बदलाव दिखना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बीते दो दशकों में गैर-कृषि रोजगारों में महिलाओं का अनुपात 5फीसदी भी बढ़ा है। यह विरोधाभास बताता है कि महिलाओं की एफएलपीआर कम होने का एक कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में कुल श्रम मांग की कमी भी है। इसे समझने का एक तरीका है- लेबर इंटेंसिटी यानी उत्पादन के अनुपात में लगाए गए श्रमिकों की संख्या। समान अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत की लेबर इंटेंसिटी काफी कम है। मसलन, बांग्लादेश, फिलीपींस और वियतनाम में जीडीपी के 10 लाख डॉलर उत्पादित करने के लिए करीब 40-50 श्रमिक काम करते हैं, जबकि भारत में 35 श्रमिक ही लगते हैं। अगर भारत में बांग्लादेश जितनी लेबर इंटेंसिटी होती तो महिला एफएलपीआर करीब 50फीसदी होती। भारत में मजदूरी और बेरोजगारी के आंकड़ों में भी श्रम की कमजोर मांग की स्थिति नजर आती है। 15-25 वर्ष की आयु के युवा ग्रेजुएट्स में करीब 40फीसदी बेरोजगारी है। इससे पता चलता है कि श्रम की मांग इतनी भी नहीं है कि इन ग्रेजुएट्स को काम करने के लिए प्रेरित करने वाली पर्याप्त तनखाह मिल सके। बांग्लादेश की रेडीमेड गारमेंट इंडस्ट्री का अनुभव बताता है कि श्रम की मांग एफएलपीआर को कैसे प्रभावित कर सकती है। 1983 में बांग्लादेश के कुल निर्यात में इस इंडस्ट्री की हिस्सेदारी 4फीसदी थी, लेकिन 2021 तक यह 81फीसदी हो गई।

इस लेबर-इंटेंसिव निर्यात सेक्टर के तेजी से हटू विस्तार ने महिलाओं के लिए लाखों रोजगार अवसर पैदा किए। भारत में श्रम की मांग इतनी कम क्यों है? इसका एक कारण श्रमिकों को रोजगार देने से जुड़ी लागत और जटिलताएं हैं। करीब 15इ भारतीय कंपनियां श्रम नियमों को बाधा मानती हैं। नियमों के पालन संबंधी आवश्यकताओं और कर्मचारियों को नियुक्त करने और हटाने से जुड़ी पाबंदियां श्रमिकों को रोजगार देने की लागत को बढ़ाती हैं। ऐसे में कंपनियां श्रम की जगह पूंजी में निवेश के लिए प्रेरित होती हैं।

पाक का ड्रोन हमलों से बचने के लिए सस्ता जुगाड़, सेना-पुलिस के ठिकानों पर मछली पकड़ने वाला जाल लगा रहे

इस्लामाबाद। उनके मुताबिक, आतंकियों का निशाना हमेशा पुलिस स्टेशन या चेकपोस्ट ही

दिखाई दे और लोगों में डर पैदा हो। उन्होंने कहा कि असली सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान की

आतंकवाद और सुरक्षा विशेषज्ञ फिदा अदील ने बताया कि मछली पकड़ने वाले जाल से ड्रोन रोकना कोई नया तरीका नहीं है। सेना पहले से ही सामान और ठिकानों को छिपाने के लिए ऐसे जाल इस्तेमाल करती रही है। यूक्रेन में भी रूसी ड्रोन को रोकने के लिए इनका इस्तेमाल किया गया है।

हालांकि, अदील वे मुताबिक, विस्फोटक से भरे ड्रोन के खिलाफ जाल कितना काम करेगा, यह उसके डिजाइन और उसे लगाने के तरीके पर निर्भर करता है।

उन्होंने पुलिस के 40 से 50फीसदी नुकसान कम होने के दावे पर भी सवाल उठाया। उनका कहना है कि असली हमले या सही परीक्षण के बिना इस आंकड़े की पुष्टि नहीं हो सकती।



नहीं होते। ड्रोन का इस्तेमाल बड़े और जरूरी ठिकानों पर हमला करने के लिए किया जाता है, ताकि हमले का असर ज्यादा

सुरक्षा एजेंसियां ड्रोन के हवा में उठते ही उसे रोकने की क्षमता रखती हैं। यूक्रेन में भी इस्तेमाल हुआ है ऐसा तरीका:-पेशावर के

स्पेन में किराएदार को घर से निकालने पर सरकार गिरी,87 साल की महिला महंगा किराया नहीं चुका पाई-8 महीने पहले चुनाव होंगे

मैड्रिड।पहला बिल: इसमें कमजोर किराएदारों को 2030 तक घर से निकालने से रोकने की योजना थी। साथ ही किराए बढ़ाने पर कुछ पाबंदियां लगाने और बड़े निवेशकों के घर खरीदने

घर कम हो सकते हैं: विरोध करने वाली पार्टियों का कहना था कि अगर मकान मालिकों पर ज्यादा नियम लगाए गए तो वे अपने घर किराए पर देने से बच सकते हैं। इससे बाजार में

सरकार के पास अपने दम पर बहुमत नहीं है। इसलिए हर बड़े फैसले के लिए दूसरी पार्टियों का समर्थन लेना पड़ता है। आवास के दोनों बिलों पर भी उसे समर्थन नहीं मिला। बजट भी पास नहीं करा पाई: सांचेज की सरकार 2023 के बाद से नया बजट पास नहीं करा सकी है। इससे पता चलता है कि संसद में सरकार के लिए जरूरी समर्थन जुटाना कितना मुश्किल हो गया था। भ्रष्टाचार और प्रवासन पर दबाव: सरकार पहले से ही भ्रष्टाचार के आरोपों और प्रवासन के मुद्दे को लेकर विपक्ष के निशाने पर थी। इन मुद्दों पर भी सांचेज पर राजनीतिक दबाव बढ़ रहा था। जुंत्स ने साथ छोड़ना शुरू किया: 2023 में कैंटेलोनिया की अलगाववादी पार्टी जुंत्स के समर्थन से सांचेज दोबारा प्रधानमंत्री बने थे। लेकिन अब जुंत्स सरकार के कई फैसलों का विरोध कर रही थी। आवास के दोनों बिलों पर भी उसने सरकार का साथ नहीं दिया। स्पेन में किराए का संकट कितना बड़ा है? 1. सस्ते घरों की संख्या बेहद कम है: स्पेन में कम आय वाले लोगों के लिए सस्ते सरकारी घर बहुत कम हैं। कुल घरों में ऐसे घरों की हिस्सेदारी सिर्फ 1.5फीसदी है। 2. महीनेभर की कमाई के करीब पहुंचा किराया: रॉयटर्स के मुताबिक कुछ मामलों में किराए की कीमत एक युवा व्यक्ति की औसत मासिक कमाई के करीब 99फीसदी तक पहुंच गई है। 3. 2028 तक 10 लाख से ज्यादा घरों की कमी का खतरा: केंद्रीय बैंक ने चेतावनी दी है कि अगर घरों की कमी दूर नहीं हुई तो 2028 तक 10 लाख से ज्यादा घरों की कमी हो सकती है।



पर रोक लगाने की बात थी। छोटे मकान मालिकों और किराएदारों को टैक्स में राहत देने का भी प्रावधान था। दूसरा बिल: इसमें किराएदारों के मौजूदा किराए के समझौते को आगे बढ़ाने की बात थी। यानी समझौता खत्म होने के बाद उन्हें तुरंत घर खाली नहीं करना पड़ता और उन्हें कुछ और समय तक उसी घर में रहने का मौका मिलता। पीएम पेद्रो सांचेज की सरकार के पास संसद में बहुमत नहीं है। इसलिए उसे हर बड़े फैसले के लिए दूसरी पार्टियों के समर्थन की जरूरत पड़ती है। सरकार को उम्मीद थी कि आवास संकट को देखते हुए दूसरी पार्टियां इन उपायों का समर्थन करेंगी। लेकिन उसे जरूरी समर्थन नहीं मिला। 2 अक्टूबर को हुए वोटिंग में दोनों प्रस्ताव पास नहीं हो सके। बिलों को समर्थन नहीं मिलने की 4 वजहें- वजह 1: दूसरी पार्टियों को लगा कि इससे किराए के

किराए के लिए घर कम पड़ सकते हैं। वजह 2: किराया और बढ़ने का खतरा: जब किराए के लिए घर कम होंगे, तो बचे हुए घरों का किराया बढ़ सकता है। यानी किराएदारों को राहत देने के बजाय समस्या और बड़ी हो सकती है। वजह 3: छोटे मकान मालिकों को लेकर भी आपत्ति थी: जुंत्स का कहना था कि सरकार की योजना में छोटे मकान मालिकों के हितों का पर्याप्त ध्यान नहीं रखा गया। सहयोगी पार्टी चाहती थी कि उनके लिए भी ज्यादा राहत और सुरक्षा हो। वजह 4: सरकार के राजनीतिक विरोधी भी साथ नहीं आए: विपक्षी पार्टियां झूठ और वॉक्स पहले से ही सांचेज सरकार की आवास नीति का विरोध कर रही थीं। उन्होंने दोनों बिलों का समर्थन नहीं किया। सांचेज ने समय से पहले चुनाव का फैसला क्यों लिया? संसद में बहुमत नहीं: सांचेज की

लंदन-शिकागो फ्लाइट 28 हजार फीट नीचे आई,पायलट ने इमरजेंसी अलर्ट भेजा,लंदन लौटी, वजह साफ नहीं

लंदन।7700 कोड क्या और कैसे एक्टिवेट होता है:-7700 विमान में गंभीर इमरजेंसी की स्थिति में इस्तेमाल होने वाला

और एयरपोर्ट की इमरजेंसी टीम को तैयार कर सकता है। 7700 से सिर्फ यह पता चलता है कि विमान में सामान्य

अपना मास्क लगाना चाहिए। कान का दबाव कम करने के लिए पानी पीना, बार-बार निगलना, जम्हाई लेना या च्युइंग



अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण कोड है। इंजन में खराबी, मेडिकल इमरजेंसी, केबिन में धुआं या किसी दूसरी गंभीर स्थिति में पायलट इसे सेट कर सकते हैं। पायलट कॉकपिट में लगे ट्रांसपोंडर पर 7700 कोड सेट करते हैं। इसके बाद ट्रांसपोंडर रेडियो सिग्नल के जरिए यह जानकारी एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) के सिस्टम तक पहुंचाता है। कंट्रोलर के रडार डिस्क्रे पर विमान की पहचान के साथ इमरजेंसी कोड दिखाई देता है। इसके बाद एटीसी विमान को प्राथमिकता दे सकता है, दूसरे विमानों के रुट में जरूरी बदलाव कर सकता है

इमरजेंसी है। समस्या क्या है, इसकी जानकारी पायलट को एटीसी से रेडियो पर देनी होती है। विमान अचानक नीचे आए तो क्या होता है:-विमान तेजी से नीचे आने पर यात्रियों को नीचे खिंचने, हल्का होने या गिरने जैसा महसूस हो सकता है। तेज डिसेंट में शरीर पर जी-फोर्स का असर भी पड़ सकता है। केबिन प्रेशर घटते तो क्या होता है-अगर नीचे आने के साथ केबिन का दबाव भी कम हो जाता है-कान में दर्द या बंद होने और सांस लेने में परेशानी हो सकती है। ऐसी स्थिति में ऑक्सीजन मास्क अपने आप नीचे आ जाते हैं। यात्री को पहले

गम चबाना मददगार हो सकता है। जरूरत पड़ने पर हल्के तरीके से बत्तालवा मैन्युवर भी किया जा सकता है। विमान इतनी तेजी से नीचे क्यों आता है? केबिन प्रेशर कम होना इसका एक कारण हो सकता है, लेकिन हर तेज डिसेंट का मतलब यही नहीं है। तकनीकी खराबी, मेडिकल इमरजेंसी, मौसम या दूसरी परिस्थितियों में भी पायलट ऊंचाई तेजी से कम कर सकते हैं। क्या विमान टूट सकता है? सिर्फ तेजी से हजारों फीट नीचे आने से विमान टूट नहीं जाता। पायलट इस दौरान स्पीड, ऊंचाई और दिशा को नियंत्रित करते हैं।

फ्रांस में टीचरों की कमी को लेकर आंदोलन हिसक,धमाके में 15 साल के छात्र का हाथ उड़ा, 5 हजार गिरफ्तार, 87फीसदी गिरफ्तार नाबालिग

पेरिस।इसवेले बाद विश्वविद्यालयों के छात्र भी आंदोलन में शामिल हो गए। छात्र नेता मानेस नडेल के मुताबिक-जब शुरुआती स्कूल में हड़ताल खत्म

माध्यमिक स्कूलों में अब शिक्षकों की संख्या कम है, जबकि छात्रों की संख्या करीब 2.5 लाख बढ़ गई है। इसी दबाव के चलते स्कूलों में भीड़ और सुविधाओं



हुई, तब तक दूसरे इलाकों में आंदोलन फेल चुका था। उनका दावा है कि इतनी बड़ी संख्या में स्कूल पहले कभी किसी आंदोलन में शामिल नहीं हुए थे।' स्कूलों में छात्र बढ़े, शिक्षक घटे:- फ्रांस में 2010 में करीब 8.33 लाख बच्चे पैदा हुए, जो उस समय पिछले 36 साल के सबसे ऊंचे आंकड़ों में था। जन्म बढ़ने की सबसे बड़ी वजह 30 साल से ज्यादा उम्र की महिलाओं में बढ़ी प्रजनन दर थी। प्रवासी महिलाओं की प्रजनन दर, फ्रांस में जन्मी महिलाओं से ज्यादा थी। अब 2010 में पैदा हुए बच्चे 15-16 साल के हो चुके हैं और हाई स्कूल में पढ़ रहे हैं। लेकिन छात्रों की संख्या बढ़ने के मुकाबले स्कूलों में कक्षाएं, सुविधाएं और शिक्षकों की संख्या उसी अनुपात में नहीं बढ़ी। 2008 की तुलना में

की कमी की शिकायतें बढ़ रही हैं। फ्रांस में एक साथ कई मोर्चों पर संकट:- फ्रांस में इस समय विरोध सिर्फ स्कूलों तक सीमित नहीं है। शिक्षक, सरकारी कर्मचारी, फायरफाइटर, स्वास्थ्यकर्मी और मछुआरे भी अलग-अलग मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। सरकारी कर्मचारी: सरकार के खर्च कम करने और वेतन रोकने की योजना के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें डर है कि बजट कटौती का असर उनकी सैलरी और दूसरी सुविधाओं पर पड़ेगा। शिक्षक: स्कूलों में शिक्षकों की कमी और काम के बढ़ते दबाव के साथ सरकार की बजट नीतियों का विरोध कर रहे हैं। फायर फाइटर: बेहतर संसाधन, फंडिंग और काम करने की सुविधाओं की मांग कर रहे हैं।

नाइजीरिया में 25 यात्री और 7 क्रू सवार लोगों को ले जा रहा मिलिट्री-फ्लेन क्रैश,नदी के पास गिरा, सर्च ऑपरेशन जारी

नाइजीरिया।1. पानी का तेज बहाव:-नदी का बहाव मलबे और लोगों को हादसे वाली जगह से दूर ले जा सकता है। इससे रेस्क्यू टीम के लिए सही जगह का पता लगाना मुश्किल होता है। 2. पानी के अंदर कुछ दिखाई नहीं देता:-नदी का पानी अक्सर गंदा होता है। गोताखोरों को कुछ मीटर दूर की चीज भी दिखाई नहीं दे सकती। ऐसे में उन्हें टॉच, सोनार और दूसरे उपकरणों की मदद लेनी पड़ती है। 3. फ्लेन तेजी से डूब सकता है:-फ्लेन का कोई हिस्सा पानी के अंदर जाने के बाद उसकी लोकेशन बदल सकती है। केबिन में फंसे लोगों तक पहुंचने के लिए गोताखोरों को पहले फ्लेन की स्थिति और गहराई का पता लगाना पड़ता है। 4. मलबे से घोट का खतरा:-टूटा हुआ फ्लेन, सीटें, धातु के हिस्से और दूसरे सामान पानी के अंदर खतरा पैदा कर सकते हैं। गोताखोरों के कपड़े या उपकरण इनमें फंस भी सकते हैं। 5. नदी की गहराई और तल की स्थिति:-नदी के नीचे कीचड़, रेत या पत्थर होने से गोताखोरों की आवाजही

मुश्किल हो सकती है। गहराई ज्यादा होने पर सामान्य गोताखोरी भी मुश्किल हो जाती है।6. पानी में ईंधन के फ्लेन से खतरा:-क्रैश के बाद फ्लेन से ईंधन या दूसरे पदार्थ पानी में फेल सकते हैं। इससे



रेस्क्यू टीम के लिए अतिरिक्त सुरक्षा चुनौती पैदा हो सकती है। 7. सोनार और दूसरे उपकरणों की जरूरत:-जब पानी में कुछ दिखाई नहीं देता, तो रेस्क्यू टीम मलबे और फ्लेन की स्थिति पता लगाने के लिए सोनार जैसे उपकरणों का इस्तेमाल कर सकती है। इसके बाद गोताखोरों को तय जगह पर भेजा जाता है। नाइजीरिया में पहले भी हुए बड़े फ्लेन हादसे:-नाइजीरिया में पिछले 20 साल में कई बड़े फ्लेन हादसे हुए हैं। इनमें यात्री और सैन्य फ्लेन

दोनों शामिल हैं। कुछ हादसों में 100 से ज्यादा लोगों की जान गई।2005 में दो बड़े हादसे:-बेल्यू एयरलाइंस हादसा: अक्टूबर 2005 में बेल्यू एयरलाइंस का फ्लेन लागोस से अबुजा जाते समय उड़ान भरने के कुछ देर बाद क्रैश हो गया। फ्लेन में सवार 117 लोगों की मौत हुई। सोलिंस एयरलाइंस हादसा: दिसंबर 2005 में सोलिंस एयरलाइंस का फ्लेन अबुजा से पोर्ट हारकोर्ट जाते समय गिर गया। इसमें 109 लोगों की मौत हुई।

मरने वालों में कई स्कूलों बच्चे भी थे। 2006 में 114 लोगों की मौत:-अक्टूबर 2006 में एडीसी एयरलाइंस का फ्लेन अबुजा से पोर्ट हारकोर्ट जाते समय क्रैश हुआ। फ्लेन में 114 लोग सवार थे और सभी की मौत हो गई। 2012 में रिहायशी इलाके में गिरा फ्लेन:-जून 2012 में डाना एयर का फ्लेन अबुजा से लागोस जाते समय क्रैश हो गया। फ्लेन लागोस के एक रिहायशी इलाके में गिरा। इसमें सवार 153 लोगों की मौत हुई। जमीन पर मौजूद लोग भी हादसे की चपेट में आए।

ब्राजील में राष्ट्रपति हार सकते हैं चुनाव,ट्रम्प के करीबी फ्लाविया बोल्सेनारो पहले दौर में आगे, पिता 27 साल से काट रहे जेल की सजा

ब्रासीलिया। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिलवा चुनाव हार सकते हैं। 4 अक्टूबर को ब्राजील में पहले दौर की वोटिंग हुई। इसमें राष्ट्रपति लूला, पूर्व राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो के बेटे से पिछड़ गए। किसी भी

वोट मिले। चुनाव से पहले आए ज्यादातर सर्वे लूला को बढ़त दिखा रहे थे, लेकिन नतीजों ने तस्वीर बदल दी। दूसरे दौर में बाकी उम्मीदवारों के वोट तय करंगे किसकी जीत-पहले दौर में लूला और फ्लावियो के अलावा



उम्मीदवार को 50फीसदी से ज्यादा वोट नहीं मिले, इसलिए अब ब्राजील में 25 अक्टूबर को दूसरे दौर की वोटिंग होगी। बोल्सोनारो परिवार अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प का करीबी माना जाता है। 2022 का चुनाव हारने के बाद तख्तापलट की साजिश के मामले में जायर बोल्सोनारो को करीब 27 साल की जेल की सजा मिली है। लूला को फ्लावियो से 2फीसदी कम वोट मिले:- ब्राजील में आम जनता सीधे राष्ट्रपति के लिए वोट करती है। राष्ट्रपति बनने के लिए किसी भी उम्मीदवार को 50फीसदी से ज्यादा वोट मिलने जरूरी हैं। पहले दौर में फ्लावियो बोल्सोनारो को करीब 47फीसदी वोट मिले, जबकि लूला को करीब 45फीसदी

10 और उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे। वे चुनाव से बाहर हो गए हैं, लेकिन उन्हें मिले वोट अब भी बहुत मायने रखते हैं। दूसरे दौर में इन्हीं वोटों से तय हो सकता है कि लूला या फ्लावियो में से कौन राष्ट्रपति बनेगा। इनमें रोनाल्डो काइआडो और रेनान सैंटोस के वोट सबसे ज्यादा अहम हैं। दोनों को मिलाकर करीब 53 लाख वोट मिले हैं। अभी दोनों ने यह नहीं बताया है कि वे लूला का साथ देंगे या फ्लावियो का। एक और बड़ी बात यह है कि पहले दौर में करीब 21फीसदी लोगों ने वोट ही नहीं डाला। अब दूसरे दौर में यह देखना होगा कि इनमें से कितने लोग वोट डालने आते हैं और किसे वोट देते हैं। पिता जेल

में, बेटा राष्ट्रपति बनने की रेस में:-45 साल के फ्लावियो बोल्सोनारो इस चुनाव में सिर्फ एक उम्मीदवार नहीं हैं, बल्कि ब्राजील के बोल्सोनारो परिवार की राजनीतिक विरासत को आगे ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। वे रियो डी जेनेरियो से सीनेटर हैं। उनके पिता जायर बोल्सोनारो जेल में होने की वजह से चुनाव नहीं लड़ सकते। ऐसे में जायर ने अपने बेटे फ्लावियो को 2026 के चुनाव में आगे किया। फ्लावियो 2002 से राजनीति में हैं, लेकिन राष्ट्रपति पद के लिए यह उनका पहला चुनाव है। उन्होंने पिता की कट्टर दक्षिणपंथी छवि को आगे बढ़ाते हुए अपराध पर सख्त कार्रवाई, टैक्स में कटौती और कारोबार को बढ़ावा देने जैसे मुद्दों को अपने अभियान का हिस्सा बनाया है। चौथी बार राष्ट्रपति बनने की कोशिश में 80 साल के लूला:-80 साल के लूला दा सिलवा चौथी बार ब्राजील की सत्ता हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। उनका चुनावी दांव गरीबों के लिए किए गए काम और सामाजिक कल्याण की योजनाओं पर है। वे लोगों को याद दिला रहे हैं कि उनकी सरकार ने गरीब परिवारों को राहत देने के लिए क्या किया। लेकिन इस बार सिर्फ पुरानी योजनाओं के भरोसे काम आसान नहीं है। महंगाई और रोजमर्रा की चीजों की बढ़ती कीमतों ने लोगों की चिंता बढ़ाई है, वहीं अपराध भी बड़ा चुनावी मुद्दा बना

अमेरिकी उपराष्ट्रपति बोले- हमलावर पायलट मुसीबत था,मालूम होने पर भी फ्लेन क्यों उड़ाने दिया

वॉशिंगटन डीसी।किसी आधिकारिक ऐलान से पहले मैं इस पर कुछ नहीं कहना चाहता। इसकी जांच चल रही है, लेकिन अभी तक मुझे ऐसा कोई पक्का

तक उसके किसी संगठन या सरकार से जुड़े होने की जानकारी नहीं मिली है। इटली के अखबार कोरियरे डेला सेरा की रिपोर्ट के मुताबिक हमामी



सबूत नहीं मिला है।' तेल अवीव की फ्लाइट में ड्यूटी कैसे मिली, इसकी जांच जारी:-ओमान और इजराइल के बीच राजनयिक संबंध नहीं हैं।

एसे में जांच का एक अहम सवाल यह है कि हमामी को तेल अवीव जाने वाली फ्लाईड्यूई की फ्लाइट में को-पायलट की ड्यूटी कैसे मिली।

सीएनएन के मुताबिक, इजराइल की शिन बेट (जांच एजेंसी), मोसाद (खुफिया एजेंसी), सेना और ट्रांसपोर्टेशन मिनिस्ट्री समेत कई एजेंसियां इस पहलू की जांच कर रही हैं। वे यह पता लगा रही हैं कि पहले उठी चिंताओं के बावजूद हमामी फ्लाइट क्रू का हिस्सा कैसे बना। घटना के बाद हमामी को सऊदी अरब से यूएई भेज दिया गया, जहां उसके खिलाफ आतंकवाद से जुड़े मामले की जांच चल रही है।

रिपोर्ट- हमामी को मौत की सजा दी जा सकती है:-आरोपी ओमानी को-पायलट हमाम अल-हमामी को यूएई में मौत की सजा का सामना करना पड़ सकता है। एक सीनियर अमीराती अधिकारी के मुताबिक, हमामी को कट्टरपंथी विचारधारा की ट्रेंनिंग मिली थी।

जांच में उसके पास कथित तौर पर चरमपंथी सामग्री और सोशल मीडिया पर लंबे समय से कट्टर विचारों से जुड़ी गतिविधियां भी मिली हैं।यूएई की एजेंसियां इस घटना को सिर्फ कॉकपिट में हुई झड़प नहीं, बल्कि आतंकवादी घटना के तौर पर देख रही हैं।इसी आधार पर आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा सकती है। हमामी ने फ्लेन क्रैश की साजिश अकेले रची थी:-हमामी ने अकेले ही विमान को क्रैश करने की साजिश रची थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक अभी

का फ्लान कैंप्टन स्मिथ को मारकर विमान को तेल अवीव में किसी ऊंची बिल्डिंग से टकराना था। उसने कॉकपिट में नमाज पढ़ने का बहाना बनाया और कैंप्टन पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया।

जब उसका पहला फ्लान नाकाम होने लगा तो उसने विमान को रेगिस्तान में गिराने की कोशिश की। इस दौरान उसने ऑटोपायलट बंद कर दिया, जिससे विमान तेजी से नीचे आने लगा।

जांचकर्ताओं को शक है कि हमामी ने विमान के दोनों इंजन बंद करने की कोशिश की थी। विमान की रफ्तार 970 किमी प्रति घंटे से ज्यादा पहुंची-इस पूरे घटनाक्रम के दौरान विमान तेजी से जमीन की ओर गिर रहा था। उसकी रफ्तार 970 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा पहुंच गई थी। इस दौरान विमान का पिछला हिस्सा भी टूट गया। को-पायलट हमामी ने कंट्रोल को भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश की। फ्लाइट एंजनेड-1073 में 174 लोग सवार थे।हमले के दौरान कैंप्टन ने विमान से इमरजेंसी सिग्नल भेजे। इसी दौरान ऐसे से प्लंबर यानि हयून ने कंट्रोल स्टिक अपनी ओर खींची, जिससे विमान का तेजी से नीचे जाना रुका।

इसके बाद दो ऑफ-ड्यूटी पायलटों ने कॉकपिट का नियंत्रण संभाला और विमान को सामान्य स्थिति में लाने की कोशिश की। वहीं, यात्रियों और क्रू की मदद से आरोपी को-पायलट को कंट्रोल किया गया।सऊदी अरब के ताबूक में इमरजेंसी लैंडिंग-सऊदी अरब के एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स ने विमान को वापस मोड़ने को कहा। इसके बाद फ्लाइट को ताबूक में इमरजेंसी लैंडिंग कराने के निर्देश दिए गए। पायलटों ने विमान को सुरक्षित उतारा।

ब्राजील लैंटिन अमेरिका की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और ब्रिक्स का संस्थापक सदस्य भी है। इसलिए यहां सरकार बदलने का असर सिर्फ देश की राजनीति तक सीमित नहीं रहेगा। लूला की सरकार चीन और ब्रिक्स देशों के साथ रिश्तों को मजबूत करने पर जोर देती रही है। ऐसे में उनकी वापसी से इन देशों के साथ मौजूदा रिश्ते और सहयोग

हुआ है। यही वे मुद्दे हैं, जिन पर विपक्ष लूला सरकार को घेर रहा है। संसद में भी मजबूत हुआ बोल्सोनारो खेमा-ब्राजील में राष्ट्रपति चुनाव के साथ संसद के लिए भी चुनाव हुए। जायर बोल्सोनारो के समर्थक दक्षिणपंथी दलों को अच्छी पकड़ मिली है। फ्लावियो बोल्सोनारो की पार्टी लिबरल पार्टी निचले सदन में सबसे ज्यादा सीटें



जीतने वाली पार्टियों में आगे रही। बोल्सोनारो परिवार के दूसरे सदस्य भी चुनाव में जीते। जायर बोल्सोनारो की पत्नी मिशेल बोल्सोनारो सीनेट पहुंच गई हैं, जबकि उनके बेटे कार्लोस बोल्सोनारो ने भी चुनाव जीत लिया है। यानी अगर लूला दोबारा राष्ट्रपति बनते भी हैं, तो हर फैसले को लागू करना उनके लिए आसान नहीं होगा। संसद में बोल्सोनारो समर्थक सांसदों की बड़ी मौजूदगी उन्हें चुनौती दे सकती है। ब्राजील में चुनाव पर अमेरिका और चीन की नजर:-

जारी रहने की संभावना है। दूसरी तरफ फ्लावियो बोल्सोनारो को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के करीब माना जाता है। ऐसे में उनकी जीत से अमेरिका के साथ ब्राजील के रिश्तों में नया बदलाव आ सकता है। यानी इस चुनाव में मुकाबला सिर्फ लूला बनाम फ्लावियो का नहीं है। ब्राजील आगे अमेरिका के करीब जाता है या चीन और रूष् के साथ अपने मौजूदा रिश्तों को और मजबूत करता है, यह इस 25 अक्टूबर को होने वाले चुनाव का नतीजा तय करेगा।

विद्युत जामवाल ने 15 मिनट रोकी सांस, 20 मिनट नहीं झपकाई पलकें, आंखों से निकले आंसू, 'स्ट्रीट फाइटर' इवेंट में बोले- तुलना छोड़ो, दोस्त वाला सवाल पूछो

मुंबई। विद्युत जामवाल अपने खतरनाक स्टंट्स और फिटनेस के लिए पहचाने जाते हैं। अब उन्होंने ऐसा कारनामा किया है, जिसे देखकर 'स्ट्रीट फाइटर' के इवेंट में मौजूद लोग हैरान रह गए। एक्टर करीब 15 मिनट तक

इसका असर उनवेंक एक्शन स्टंट्स में भी नजर आता है। बचपन में वीडियो गेम नहीं, खेलों पर था ध्यान-इवेंट में विद्युत ने अपने हॉलीवुड डेब्यू और धलसिम के किरदार के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि बचपन

के काम करने के तरीके में अंतर पर भी बात की। उन्होंने कहा कि हॉलीवुड में समय की पाबंदी है। वहां बड़ा से बड़ा स्टार भी तय समय पर सेट पर पहुंचता है। उन्होंने बताया कि सेट पर करीब 300 लोग काम करते हैं और सभी तय अनुशासन का पालन करते हैं। विद्युत ने मजाकिया अंदाज में कहा कि अगर कोई एक मिनट भी लेट हो जाए तो प्रोडक्शन की तरफ से फोन आ जाता है कि कहीं वह अस्पताल में तो नहीं है। हॉलीवुड एक्टर से फाइट के सवाल पर बोले- 'शट अप!'- इवेंट में एक रिपोर्टर ने विद्युत से बॉलीवुड के किसी अभिनेता के साथ काम करने या फाइट करने को लेकर सवाल पूछा। सवाल पूरा होने से पहले ही विद्युत ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने कहा कि तुलना वाले सवाल कब बंद होंगे। विद्युत ने रिपोर्टर से कहा कि उनकी हॉलीवुड में मिली सफलता को लेकर सवाल पूछा जाए। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा- 'शट अप! दोस्त वाला सवाल पूछा।' इसके बाद रिपोर्टर ने पूछा कि वह बॉलीवुड के किस अभिनेता के साथ फाइट करना चाहेंगे, तो विद्युत ने कहा कि जिस रिपोर्टर उनवेंक साथ लड़वाना चाहते हैं, उसका नाम उन्हें मैंसेज कर दें।

उन्होंने कहा कि वह किसी से भी फाइट करने के लिए तैयार हैं। 16 अक्टूबर को रिलीज होगी 'स्ट्रीट फाइटर'-विद्युत जामवाल 'स्ट्रीट फाइटर' में महाहूवी वीडियो गेम किरदार धलसिम को भूमिका निभा रहे हैं।

फिल्म में नोआ सेंटिनियो, एंड्रयू कोजी, कैलिना लियाम, रोमन रेंस यानी जो अनोआई, डेविड डेस्टमालचियन, कोडी रोड्स, एरिक आद्रे, एंड्रयू शुज़न, 50 सेंट और जेसन मोमोआ जैसे कलाकार भी नजर आएंगे। फिल्म भारत में 16 अक्टूबर 2026 को अग्रेजी के साथ हिंदी, तमिल और तेलुगु में रिलीज होगी।

सलमान के बाद अब नीतू कपूर ने पैपराजी पर कसा तंज, 'बैक पोज' कहने पर पलटकर पूछा- आपको ये बहुत अच्छा लगता है ना

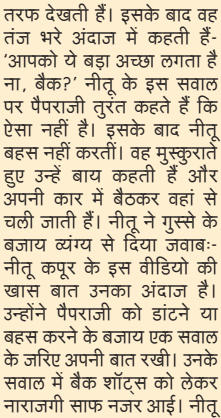
मुंबई। बॉलीवुड में इन दिनों पैपराजी के बैक शॉट्स को लेकर बहस छिड़ी हुई है। सलमान खान और नेहा धूपिया के बाद अब



नीतू कपूर ने भी इस पर नाराजगी जाहिर की है। दरअसल, पैपराजी ने नीतू से कैमरे की तरफ पीठ करके पोज देने को कहा, तो उन्होंने व्यंग्यात्मक अंदाज में पलटकर पूछा- 'आपको ये बड़ा अच्छा लगता है ना, बैक?' नीतू का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और इस अंदाज की चर्चा हो रही है। पैपराजी ने नीतू से मांगा बैक पोज-नीतू कपूर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। वीडियो में नीतू एक जगह से निकलकर अपनी कार की ओर जाती नजर आ रही है।



वहां मौजूद पैपराजी उनसे तस्वीरें लेने के लिए पोज देने को कहते हैं। पैपराजी की बात सुनने के बाद नीतू कैमरे की तरफ पीठ करके खड़े होने के बजाय उनकी



के इस कमेंट के बाद सोशल मीडिया पर यूजर्स अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। कई लोगों ने कहा कि सेलिब्रिटीज की तस्वीरें लेते समय पैपराजी को उनकी सहजता और पसंद का ध्यान रखना चाहिए। सलमान खान ने भी बैक शॉट्स पर जताई थी नाराजगी-नीतू कपूर की यह प्रतिक्रिया ऐसे समय सामने आई है, जब सलमान खान ने भी पैपराजी के बैक शॉट्स को लेकर सवाल उठाया था। 'बिग बॉस 20' के एक एपिसोड में सलमान ने महिलाओं की पीछे से तस्वीरें लेने के चलन पर नाराजगी जाहिर की थी। सलमान ने कहा था कि अगर कोई महिला इस तरह की तस्वीरें लेने से असहज है और फोटोग्राफर्स से ऐसा न करने के लिए कहती है, तो उनकी बात का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने इस तरह की फोटोग्राफी पर आपत्ति जताते

हुए कहा था कि महिलाओं को अपनी पसंद के खिलाफ ऐसी तस्वीरें खिंचवाने के लिए मजबूर



नहीं किया जाना चाहिए। सलमान की इस टिप्पणी के बाद सोशल मीडिया पर पैपराजी के फोटो लेने के तरीके को लेकर बहस शुरू हुई थी। नेहा धूपिया भी पैपराजी से भिड़ चुकी हैं- सलमान खान से पहले नेहा धूपिया भी इसी मुद्दे पर पैपराजी को फटकार लगा चुकी हैं। एक इवेंट वेड करीबाने नेहा ने फोटोग्राफर्स से सवाल किया था कि महिलाओं की पीछे से तस्वीरें लेने की जरूरत क्यों पड़ती है। नेहा ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा था कि वह सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि उन दूसरी महिलाओं के लिए भी बात कर रही हैं, जिन्हें इस तरह की तस्वीरों से परेशानी होती है। उनका कहना था कि कई महिलाएं पैपराजी से ऐसी तस्वीरें न लेने के लिए कह चुकी हैं। फराह खान ने भी पैपराजी को दिखाई थी सलमान की बात याद दिलाते हुए पीछे से तस्वीरें न लेने की बात कही थी। फराह का कहना था कि अगर कोई सेलिब्रिटी इस तरह की तस्वीर नहीं चाहता, तो उसकी बात माननी चाहिए। पिछले कुछ समय में कई बॉलीवुड सेलिब्रिटी पैपराजी फोटोग्राफी के तरीके पर सवाल उठा चुके हैं।

फर्जी मैसेज वायरल होने पर भड़के जावेद अख्तर, सीजेपी-अभिजीत दीपके की आलोचना करने के दावों को बताया झूठ, बोले- मेरे नाम का इस्तेमाल क्यों?

मुंबई। जावेद अख्तर ने सोशल मीडिया पर वायरल उस मैसेज को पूरी तरह फेक बताया है, जिसमें दावा किया गया था कि उन्होंने कॉकरोच जनता पार्टी



(सीजेपी) और उसके संस्थापक अभिजीत दीपके की आलोचना की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस दावे को खारिज किया। जावेद अख्तर ने सवाल उठाया कि अभिजीत दीपके और सीजेपी की आलोचना के लिए उनके नाम का इस्तेमाल क्यों किया जा रहा है। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'मैं जावेद अख्तर, सभी को बताना चाहता हूँ कि सोशल मीडिया पर फैला यह झूठा मैसेज कि मैंने सीजेपी की आलोचना की है और अभिजीत दीपके को नीचा दिखाया है। यह पूरी तरह से फेक है। मुझे आश्चर्य है कि दीपके और सीजेपी का विरोध करने वालों को मुझ जैसे व्यक्ति से विश्वसनीयता उधार लेने की जरूरत क्यों पड़ रही है? ये हालत हो गई है? दुखद है।' बता दें कि सोशल मीडिया पर वायरल हुए फेक मैसेज में जावेद अख्तर ने अभिजीत दीपके और सीजेपी की आलोचना की थी। इसमें दीपके को अरविंद केजरीवाल की कठपुतली बताया गया था। जावेद अख्तर और कंचन गुप्ता में सोशल मीडिया पर भिड़त- सोमवार को जावेद अख्तर और सीजेपी प्रसारण मंत्रालय में वरिष्ठ सलाहकार कंचन गुप्ता ऑल इंडिया इमार्ग एसोसिएशन के अध्यक्ष मौलाना साजिद रशीदी के एक बयान को लेकर सोशल

मीडिया एक्स पर भिड़ गए। दरअसल, मौलाना साजिद रशीदी ने आबादी बढ़ाने को लेकर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि मुस्लिम परिवारों में पांच से ज्यादा बच्चे होना सामान्य है और छह बच्चों की संख्या उनके लिए लास्ट है। उन्होंने हिंदू परिवारों के कम बच्चे पैदा करने पर भी सवाल उठाए। रशीदी ने कहा था, 'हमारे यहां तो पांच से ऊपर होते हैं सबके। छह तो बिल्कुल लास्ट आंकड़ा है।

कम से कम नहीं तो छह, आठ, दस और ग्यारह-बारह भी होते हैं।' उन्होंने हिंदुओं की ओर इशारा करते हुए कहा, 'कम से कम दस पर तो आओ।' कंचन गुप्ता ने जावेद अख्तर पर साधा निशाना- 'कंचन गुप्ता ने रशीदी के बयान की खबर शेयर करते हुए जावेद अख्तर पर सवाल उठाए। उन्होंने लिखा कि अगर किसी हिंदू ने कहा होता कि मुसलमानों के 11-12 बच्चे होते हैं तो नसीरुद्दीन शाह भड़क जाते, जावेद अख्तर को बहुत बुरा लगता और लेली गैंग सड़कों पर 'सर तन से जुदा...' के नारे लगाते हुए मार्च निकालता। सीजेपी का विरोध करने वालों को मुझ जैसे व्यक्ति से विश्वसनीयता उधार लेने की जरूरत क्यों पड़ रही है? ये हालत हो गई है? दुखद है।' बता दें कि सोशल मीडिया पर वायरल हुए फेक मैसेज में जावेद अख्तर ने अभिजीत दीपके और सीजेपी की आलोचना की थी। इसमें दीपके को अरविंद केजरीवाल की कठपुतली बताया गया था। जावेद अख्तर और कंचन गुप्ता में सोशल मीडिया पर भिड़त- सोमवार को जावेद अख्तर और सीजेपी प्रसारण मंत्रालय में वरिष्ठ सलाहकार कंचन गुप्ता ऑल इंडिया इमार्ग एसोसिएशन के अध्यक्ष मौलाना साजिद रशीदी के एक बयान को लेकर सोशल

पेट दर्द को सिर्फ गैस न समझें, ये 'पैक्रियाटाइटिस' हो सकता है, जानें इसका कारण/लक्षण/बचाव व सावधानियां

नयी दिल्ली। पेट दर्द, मतली और उल्टी को लोग अक्सर गैस या अपच समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन कई बार इसके पीछे 'पैक्रियाटाइटिस' जैसी गंभीर बीमारी हो सकती है। यह पैक्रियाज (अग्न्याशय) में होने वाली सूजन है। पैक्रियाज भोजन को पचाने और रक्त शूगर कंट्रोल रखने में अहम भूमिका निभाता है। जब इसमें सूजन आ जाती है, तो कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। 'लोबल बर्डन ऑफ डिजीज' (जीबीडी) के मुताबिक, भारत में पैक्रियाटाइटिस के मरीजों की संख्या 1990 में करीब 2.3 लाख थी, जो 2021 में बढ़कर 5.2 लाख हो गई। यानी 31 साल में मामलों में करीब 126फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसलिए आज 'फिजिकल हेल्थ' में पैक्रियाटाइटिस पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन लोगों को इसका रиск ज्यादा होता है? इससे बचने के लिए क्या करें? विषय को समझे एक्सपर्ट- डॉ. अशोक कुमार, सीनियर कंसल्टेंट, एचआईडी, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी, धर्मशिला नारायण सुपर स्पेशलिटी, हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल-जवाब के माध्यम से। सवाल- पैक्रियाज क्या है? इसका शरीर में क्या काम है? जवाब- इसे पैंडिटर्स से समझिए- पैक्रियाज पेट के पीछे और छोटी आंत के पास होता है। यह लगभग 15-20 सेंटीमीटर लंबी एक रैड (ग्रीन) है। पैक्रियाज ऐसे एंजाइम बनाता है, जो छोटी आंत में पहुंचकर भोजन में मौजूद कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और फैट को तोड़ने में मदद करते हैं। यह इंसुलिन और ग्लूकागॉन जैसे हार्मोन भी बनाता है। इंसुलिन ब्लड में शुगर को मात्रा कम करने में मदद करता है। जबकि ग्लूकागॉन जरूरत पड़ने पर इसे बढ़ाने का काम करता है। अगर पैक्रियाज ठीक से काम न करे तो डाइजेसन प्रभावित होता है। साथ ही ब्लड शुगर का लेवल भी बिगड़ता है। इससे डायबिटीज जैसी समस्याएं हो सकती हैं। सवाल- पैक्रियाटाइटिस क्या होता है? जवाब- पैंडिटर्स से समझिए- पैक्रियाटाइटिस एक ऐसी कंडीशन है, जिसमें पैक्रियाज में सूजन आ जाती है। इससे पैक्रियाज पर पैक्रियाज भोजन को पचाने वाले एंजाइम बनाता है, जो छोटी आंत में पहुंचकर काम करते हैं। लेकिन पैक्रियाटाइटिस में ये एंजाइम समय से पहले

पैक्रियाज के अंदर ही एक्टिव हो जाते हैं और उसके टिश्यूज को नुकसान पहुंचाने लगते हैं। इससे सूजन, दर्द और अन्य समस्याएं पैदा होती हैं। सवाल- पैक्रियाटाइटिस कितने प्रकार का होता है? जवाब- पैक्रियाटाइटिस मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है- 1. एक्यूट पैक्रियाटाइटिस- इसमें पैक्रियाज में अचानक सूजन आ जाती है। ज्यादातर मामलों में सही इलाज मिलने पर मरीज कुछ दिनों के भीतर ठीक हो जाता है। 2. क्रॉनिक पैक्रियाटाइटिस- यह पैक्रियाज में लंबे समय तक रहने वाली सूजन है। यह धीरे-धीरे पैक्रियाज को नुकसान पहुंचाती रहती है और वहां स्कार टिश्यू या फाइब्रोसिस (निशान) बनने लगते हैं। इससे पैक्रियाज की सामान्य कार्यक्षमता प्रभावित होती है। सवाल- पैक्रियाटाइटिस क्यों होता है? जवाब- इसकी सबसे कॉमन वजहें गॉलस्टोन (पित्ताशय की पथरी) और ज्यादा शराब पीना हैं। गॉलस्टोन पैक्रियाटिक डक्ट को ब्लॉक कर सकती है। इससे पामन एंजाइम बाहर नहीं निकल पाते और पैक्रियाज में ही एक्टिव होकर उसे नुकसान पहुंचाने लगते हैं। पैक्रियाटाइटिस के संभावित कारण- गॉलस्टोन (पित्ताशय की पथरी) पेट में चोट/सर्जरी हाई ड्राइंग्रिलसराइड्स, वायरल / बैक्टीरियल इन्फेक्शन, ऑटोइम्यून बीमारियां, ज्यादा शराब पीना, दवाओं का साइड इफेक्ट, आनुवंशिक कारण। सवाल- इसके लिए लोगों की लाइफस्टाइल और आदतें कितनी जिम्मेदार हैं? जवाब- कई मामलों में खराब लाइफस्टाइल इसका रиск बढ़ाती है, जैसेकि- लंबे समय तक शराब पीने से पैक्रियाज में बार-बार सूजन हो सकती है। यह स्थिति क्रॉनिक पैक्रियाटाइटिस का कारण बन सकती है। स्मोकिंग भी पैक्रियाज की सूजन और डैमेज का रиск बढ़ाती है। ज्यादा तला-भुना और प्रोसेस्ड फूड खाने से ब्लड में ट्राइग्लिसराइड्स का लेवल बढ़ता है। यह पैक्रियाटाइटिस का एक प्रमुख कारण है। लो फिजिकल एक्टिविटी से शरीर का मेटाबोलिज्म प्रभावित होता है। इससे डाइजेस्टिव सिस्टम से जुड़ी समस्याओं का रиск बढ़ता है। मोटापा से गॉलस्टोन का रиск बढ़ता है। यह पैक्रियाटाइटिस की सबसे कॉमन कारणों में से एक है। सवाल-

पैक्रियाटाइटिस के शुरुआती लक्षण क्या हैं? जवाब- इसका शुरुआती लक्षण पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द है। यह दर्द अचानक शुरू हो सकता है और कई बार पीठ तक फैल सकता है। पैक्रियाटाइटिस के शुरुआती लक्षण- मतली, उल्टी, पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द। पेट में भारीपन। सूजन महसूस होना। भूख कम लगना। खाने के बाद दर्द बढ़ना। हल्का बुखार। सवाल- पैक्रियाटाइटिस के गंभीर लक्षण क्या हैं? जवाब- पैक्रियाज में लगातार सूजन बढ़ने पर कुछ ऐसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं, जो मेडिकल इमरजेंसी होते हैं। पैक्रियाटाइटिस के गंभीर लक्षण- पेट के ऊपरी



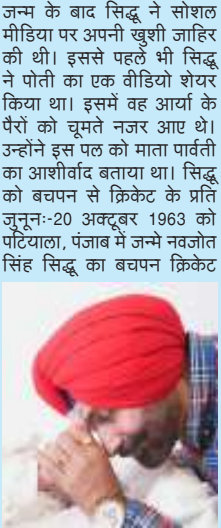
हिस्से में लगातार दर्द। पेट दर्द का पीठ तक फैलना। तेज बुखार। हार्ट बीट तेज होना। चक्कर आना। क्रॉनिक पील्या होना। लगातार उल्टी होना। सांस फूलना। ब्लड प्रेशर कम होना। कमजोरी महसूस होना। सवाल- क्या पैक्रियाटाइटिस एक गंभीर और जानलेवा बीमारी है? जवाब- हां, अगर सूजन ज्यादा बढ़ जाए तो कई तरह के कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं- गंभीर इन्फेक्शन-ब्लीडिंग, सक्से लेने में परेशानी, किडनी फेलियर, मल्टी-ऑर्गन फेलियर, सवाल- किन लोगों को पैक्रियाटाइटिस का रस्क ज्यादा होता है? जवाब- कुछ लोगों में इसका रस्क दूसरों की तुलना में ज्यादा होता है। पैक्रियाटाइटिस का रस्क इन्हें ज्यादा- जिन्हें

गॉलस्टोन है। जो शराब पीते हैं। जिन्हें ऑटोइम्यून बीमारी है। जो धूम्रपान करते हैं। जिनकी पैक्रियाटाइटिस की फैमिली हिस्ट्री है। जो क्रॉनिक डायबेटिक हैं। जो मेडिकेशन्स पर हैं। जिनका ट्राइग्लिसराइड्स हाई है। जो ओबेज हैं। सवाल- पैक्रियाटाइटिस का डाइग्नोसिस कैसे होता है? जवाब- डॉक्टर सबसे पहले मरीज के लक्षण और मेडिकल हिस्ट्री के आधार पर शारीरिक जांच करते हैं। पैक्रियाटाइटिस की आशंका होने पर पुष्टि के लिए कुछ ब्लड और इमेजिंग टेस्ट कराते हैं। बीमारी की गंभीरता समझने के लिए अन्य जांचें भी करा सकते हैं, जैसे- एंजाइम, एमआरआई, लिवर फंक्शन टेस्ट, एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड, सैला- पैक्रियाटाइटिस का इलाज कैसे होता है? जवाब- यह इस बात पर निर्भर करता है कि बीमारी कितनी गंभीर है और इसकी वजह क्या है। एक्यूट पैक्रियाटाइटिस के कई मामलों में मरीज को अस्पताल में भर्ती करके इलाज किया जाता है। अगर इसकी वजह गॉलस्टोन है तो पथरी हटाने की जरूरत पड़ सकती है। शराब से जुड़े मामलों में शराब पूरी तरह छोड़ने की सलाह दी जाती है। गंभीर मामलों में संक्रमण, पल्लुड की कमी या अन्य कॉम्प्लिकेशंस के लिए अतिरिक्त इलाज की जरूरत पड़ती है। सवाल- इस बीमारी में कौन-सी चीजें बिल्कुल नहीं खानी चाहिए और क्या खा सकते हैं? पैक्रियाटाइटिस में क्या खाएं, क्या नहीं? जो नहीं खाना चाहिए-शराब, तला-भुना भोजन, फास्ट फूड, सॉफ्ट ड्रिंक्स, ज्यादा घी, मक्खन, क्रीम, प्रोसेस्ड मीट, क्रीम वाले केक पेस्ट्री, पैकेज्ड स्नैक्स। अब जो खा सकते हैं- पानी, नारियल पानी, उबला या ग्रिल्ड भोजन, घर का बना ताजा जल, बिना चीनी वाले ड्रिंक्स, लो फैट दूध और दही दालें, राजमा

और चना, ताजे फल, ओट्स, दलिया और साबुत अनाज। सवाल- पैक्रियाटाइटिस का डायबिटीज से क्या संबंध है? जवाब- अगर सूजन लंबे समय तक बनी रहे या बार-बार हो तो पैक्रियाज की कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इससे शरीर में ब्लड शुगर का संतुलन बिगड़ता है और डायबिटीज का रस्क बढ़ता है। क्रॉनिक पैक्रियाटाइटिस में लंबे समय तक बनी रहने वाली सूजन पैक्रियाज को नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसे मरीजों में ब्लड शुगर का संतुलन बिगड़ने और आगे चलकर डायबिटीज विकसित होने का रस्क बढ़ सकता है। सवाल- पैक्रियाटाइटिस से बचाव के लिए क्या करें? जवाब- कुछ हेल्दी आदतें अपनाकर पैक्रियाटाइटिस का रस्क काफी हद तक कम कर सकते हैं, जैसेकि- बैलेंस्ड डाइट लें। तला-भुना और अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड न खाएं। रेगुलर फिजिकल एक्टिविटी करें। हेल्दी वेट बनाएं रखें। शराब न पिएं। धूम्रपान न करें। ट्राइग्लिसराइड्स और ब्लड शुगर कंट्रोल रखें। गॉलस्टोन की समस्या होने पर समय पर इलाज कराएं। डॉक्टर की सलाह के बिना दवाएं न लें। पैक्रियाटाइटिस से जुड़े कॉमन मिथ और फैक्ट-मिथ 1- हर पेट दर्द पैक्रियाटाइटिस हो सकता है। फैक्ट- पेट दर्द के कई कारण हो सकते हैं, जैसे गैस, अपच, अक्सर या गॉलस्टोन। इसलिए सिर्फ पेट दर्द के आधार पर पैक्रियाटाइटिस की पहचान नहीं की जा सकती। मिथ 2- सिर्फ शराब पीने वालों को ही पैक्रियाटाइटिस होता है। फैक्ट- गॉलस्टोन, हाई ट्राइग्लिसराइड्स, कुछ दवाएं, संक्रमण और जेनेटिक फैक्टर्स भी पैक्रियाटाइटिस का कारण बन सकते हैं। मिथ 3- दबाव-पतले लोगों को पैक्रियाटाइटिस नहीं हो सकता। फैक्ट- यह बीमारी किसी भी उम्र और वजन के व्यक्ति को हो सकती है। मिथ 4- पैक्रियाटाइटिस हमेशा अचानक और तेज दर्द के साथ ही आता है। फैक्ट- एक्यूट पैक्रियाटाइटिस में दर्द अचानक हो सकता है। लेकिन क्रॉनिक पैक्रियाटाइटिस में लक्षण धीरे-धीरे विकसित हो सकते हैं और दर्द बार-बार या लंबे समय तक बना रह सकता है। मिथ 5- घरेलू नुस्खों से पैक्रियाटाइटिस ठीक किया जा सकता है। फैक्ट- घरेलू नुस्खों पर निर्भर रहना खतरनाक हो सकता है।

सिद्ध बोले- मैं श्मशान घाट से सिक्के चुराता था, जलेबी के लिए पैसे कम पड़े तो दोस्तों संग गया, कपिल शर्मा शो में सुनाया किस्सा

अमृतसर। पूर्व क्रिकेटर और कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्ध ने कपिल शर्मा के शो में अपने बचपन का एक किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि यह बात करीब 1973-74 की है, जब उनसे पिता उन्हें दूध-जलेबी खाने के लिए 25 पैसे यानी चव्वी दिया करते थे। उन्होंने कहा कि- 'कई बार ज्यादा जलेबी खाने का मन करता था। हमें पता चला कि श्मशान घाट में अंतिम संस्कार के समय लोग चव्वी, अठ्ठी और दूसरे सिक्के छेड़ करते हैं। इसके बाद मैं दोस्तों के साथ रात में श्मशान घाट जाता था और वहां पड़े सिक्के इकट्ठे करके उन पैसे से दूध-जलेबी खाता था।' सिद्ध ने कहा कि कुछ समय बाद पंडित को इसकी जानकारी हो गई और उन्होंने हमें सिक्के उठाने से रोक दिया। बाद में पंडित खुद ही वहां पड़े सिक्के इकट्ठे करने लगे। कपिल के शो में सिद्ध ने किस्सा सुनाया- नेटफ्लिक्स पर शनिवार को प्रसारित हुए एपिसोड में फिल्म 'द वावन: फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट' की स्टारकास्ट कपिल शर्मा के शो में पहुंची। इस दौरान सिद्धार्थ मल्होत्रा, तमना भाटिया समेत फिल्म की पूरी स्टारकास्ट मौजूद रही। शो के दौरान कपिल शर्मा ने नवजोत सिंह सिद्ध से पूछा कि क्या वह भूत-प्रेत में विश्वास करते हैं। इस सवाल के जवाब में सिद्ध ने अपने बचपन का एक किस्सा सुनाया। सिद्ध ने पोती का वीडियो शेयर किया- 5 अक्टूबर को पूर्व क्रिकेटर और कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्ध ने अपनी पोती आर्या सिद्ध का एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। वीडियो में उनकी पत्नी नवजोत कौर सिद्ध पहली बार पोती से बात करती नजर आ रही हैं। वहीं, सिद्ध अपने मजाकिया अंदाज में नजर आए। वीडियो में नवजोत कौर नन्हीं आर्या से आंखें खोलने के लिए कहती हैं। इस पर नवजोत सिंह सिद्ध मजाकिया अंदाज में कहते हैं, 'ये कोई नवजोत सिद्ध थोड़ी है, जो तुम्हारी बात मानेगा।' उनके इस अंदाज से माहौल खुशनुमा हो जाता है। 1 अक्टूबर को दादा बने सिद्ध-सिद्ध के बेटे करण सिद्ध और बहु इनायत रंधावा 1 अक्टूबर को बेटी आर्या के माता-पिता बने थे। पोती के



जन्म के बाद सिद्ध ने सोशल मीडिया पर अपनी खुशी जाहिर की थी। इससे पहले भी सिद्ध ने पोती का एक वीडियो शेयर किया था। इसमें वह आर्या के पैरों को चूमते नजर आए थे। उन्होंने इस पल को माता पार्वती का आशीर्वाद बताया था। सिद्ध को बचपन से क्रिकेट के प्रति जूनून-20 अक्टूबर 1963 को पॉटयाला, पंजाब में जन्मे नवजोत सिंह सिद्ध का बचपन क्रिकेट

करारी शिकस्त के बाद से ही सक्रिय राजनीति से दूर हैं। उनकी इस दूरी का मुख्य कारण चुनाव के बाद पंजाब कांग्रेस में उनकी सांगठनिक उपेक्षा, शीर्ष राजस्व सेतुत्व के साथ मतभेद और दिसंबर 1988 के रोड रेंज मामले में सुप्रीम कोर्ट से मिली एक साल की जेल की सजा (मई 2022 से अप्रैल 1988 के रोड रेंज मामले में सुप्रीम कोर्ट से मिली एक साल की जेल की सजा) रही हैं। जेल से रिहा होने के बाद उनकी पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्ध के स्टैंड-4 कैसर के इलाज और देखभाल के चलते उन्होंने अपना पूरा ध्यान परिवार पर केंद्रित कर लिया। फरवरी 2026 में उनकी पत्नी को कांग्रेस विरोधी बयानों के कारण पार्टी से निष्कासित कर दिया गया, जिसके बाद उन्होंने 'भारतीय राष्ट्रवादी पार्टी' बना ली, लेकिन सिद्ध खुद कांग्रेस और सक्रिय राजनीति दोनों से दूर बने हुए हैं। श्राद्ध के बाद राजनीति में सक्रिय होने की चर्चा-नवजोत सिंह सिद्ध फिलहाल राजनीति से दूर हैं। हालांकि, यूपीसी गलियारों में चर्चा है कि श्राद्ध खत्म होने के बाद वह फिर राजनीति में सक्रिय हो सकते हैं। कुछ जगहों पर उनके पार्टी बदलने की भी चर्चा है। हालांकि, इस संबंध में अभी कोई ठोस जानकारी सामने नहीं आई है।

स्वताधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41युपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। संपादक/प्रकाशक डा. पुनीत अरोरा मो.नं.09415608710 RNNIO.UPHIN.20165398 www.adhuniksamachar.com

नोट- इस समाचार पत्र में प्रकाशित सम्स्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीओआरबी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न सम्स्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।